भारत एवं राजस्थान सरकार द्वारा विज्ञापनों के लिए मान्यता प्राप्त

आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2023-2025

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 09 | अंक 23 | उदयपुर सोमवार 16 दिसंबर 2024 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

राजस्थान सरकार

एक वर्ष
परिणाम उत्कर्ष

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

महत्वपूर्ण फैसलों से बदलती राजस्थान की तस्वीर

संशोधित पीकेसी योजना के लिए राजस्थान, मध्य प्रदेश और केन्द्र सरकार के बीच एमओयू

शेखावाटी अंचल को बहुप्रतीक्षित यमुना जल उपलब्ध कराने के लिए राजस्थान, हरियाणा और केन्द्र सरकार के बीच एमओयू

ऊर्जा क्षेत्र में केंद्रीय पीएसयू के साथ 2.24 लाख करोड़ के एमओयू

प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) में 38,447 आवास पूर्ण 1 लाख 55 हजार नए आवासों की स्वीकृति

पीएम-सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना में 20 हजार रूफटॉप सोलर संयत्र स्थापित

प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) में 30,297 आवास पूर्ण, 30,408 नए आवासों की स्वीकृति

लगभग 96 हजार कृषि कनेक्शन और 4 लाख 64 हजार घरेलू विद्युत कनेक्शन जारी

श्री अन्नपूर्णा रसोई योजना के तहत 8 रुपये में भरपेट भोजन, प्रति थाली सरकार की तरफ से 22 रुपये का अनुदान

किसान सम्मान निधि में 70 लाख से अधिक कृषकों को 5500 करोड़ रुपये से अधिक राशि हस्तान्तरित

लगभग 26 हजार सोलर पम्प सेट की स्थापना के लिए लगभग 400 करोड़ रुपये का अनुदान

मुख्यमंत्री आयुष्मान आरोग्य योजना एवं मा वाउचर योजना प्रारम्भ

5 नये मेडिकल कॉलेज बारां, बांसवाड़ा, नागौर, झुन्झुनूं एवं सवाई माधोपुर में प्रारम्भ

राइजिंग राजस्थान ग्लोबल इन्वेस्टमेन्ट समिट 2024 में लगभग 35 लाख करोड़ रुपये के एम.ओ.यू.

मुख्यमंत्री वृक्षारोपण महाअभियान के तहत 7 करोड़ से अधिक पौधे रोपित

सड़क निर्माण पर लगभग 15000 करोड़ रुपये व्यय

43000 से अधिक पदों पर नियुक्तियां

10.22 लाख ग्रामीण परिवारों को नल से जल, 5257 करोड़ रुपये व्यय

एमजेएसए 2.0 में 5000 गाँवों में 1 लाख वाटर हार्वेस्टिंग स्ट्रक्चर्स कार्य

दस नवीन नीतियां

- राजस्थान निवेश प्रोत्साहन योजना
- राजस्थान मिनरल पॉलिसी
- राजस्थान एम-सैण्ड पॉलिसी
- राजस्थान एमएसएमई पॉलिसी
- इंटीग्रेटेड क्लीन एनर्जी पॉलिसी
- राजस्थान एवीजीसी-एक्सआर पॉलिसी
- राजस्थान एक जिला-एक उत्पाद नीति
- इंटीग्रेटेड क्लस्टर डवलपमेंट स्कीम
- राजस्थान एक्सपोर्ट प्रमोशन पॉलिसी
- राजस्थान ट्यूरिज्म यूनिट पॉलिसी

निभाई जिम्मेदारी, हर घर खुशहाली

राजस्थान संवाद

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

अपना देश अपनी संस्कृति

राजा द्वारा गीदड़ों को कम्बलों का दान

एक दिन गीदड़ों सम्बन्धी प्रसंग में डॉ. पुरूषोत्तम छंगाणी ने मुझे एक कथा सुनाई जो यह थी-जैसलमेर का एक राजा था। वह बड़ा कंजूस और मनमौज्या था। अपनी प्रजा के लिए वह कुछ भी नहीं करना चाहता था। धनमाल की उसके पास कोई कमी नहीं थी। मंत्री चाहता कि राजा के हाथ से कोई ऐसा काम हो जिससे लोगों का भला हो और राजा की वाहवाही हो। वह कोई युक्ति सोचने लगा।

सर्दी के दिन आये। एक दिन कड़ाके की सर्दी में मंत्री ने लोगों को ठिठुरते देखा और कई बच्चों व बूढ़ों को मरते सुना तो रात भर उसे नींद नहीं आई। इसी बीच उसने आस-पास के खेतों में गीदड़ों की जोर-जोर की आवाज सुनी। वह उठ बैठा और बड़ा प्रसन्न हुआ कि उसे एक अच्छी युक्ति हाथ लग गई जिससे वह प्रात: होते ही राजा से निवेदन कर लोगों की भलाई के लिए कुछ करवा सकेगा।

सुबह हुई। प्रतिदिन की भांति वह राजा के पास पहुंचा। राजा ने जब मंत्री को हालचाल पूछे तो मंत्री बोला-आपके राज्य में और तो सब अमन चैन है पर गीदड़ बड़े दुखी हैं। उन बिचारों के लिए कुछ होना चाहिए। वे रात-रात भर सर्दी से ठिठुरते कराहते रहते हैं। राजा को सुनते ही दया आ गई। उसने मंत्री से राय मांगी कि उनके लिये क्या करना चाहिए। मंत्री ने कहा-सारे गीदड़ों को ओढ़ने के लिए कम्बलें दे दी जाय और रहने के लिए पठियाल बनवा दिये जाय। मंत्री को तो हुकम की देर थी। उसने हजारों कम्बलें तथा गांव-गांव पठियाल बनवाये। इससे कइयों को रोजगार मिला। जब कम्बलें बन गई तो मंत्री ने गांव-गांव गरीब लोगों में उन्हें बंटवा दीं जिससे लोग सर्दी से अपनी रक्षा कर सके और पठियालों में बे-घरबारी रातवासा कर सके। मंत्री ने यह सब करके राजा को सूचना दे दी। राजा बड़ा प्रसन्न हुआ कि अब उसके राज्य में कोई दुखी नहीं रहेगा।

एक दिन जब राजा सोया हुआ था कि उसे गीदड़ों का शोर सुनाई दिया। वह नहीं समझ पाया कि अब गीदड़ों को किस बात का दुख है और वे क्या चाहते हैं। सुबह होते ही उसने मंत्री को बुलवाया और इसका कारण पूछा। हाजिर जबाब मंत्री बोला -हजूर, अब उन्हें कोई कष्ट नहीं है। वे तो आपको धन्यवाद देने आये थे कि राजा साहब आपने बहुत अच्छा किया। मंत्री की इस बात पर राजा बड़ा प्रसन्न हुआ और इतने अच्छे कार्य के लिये उसे इनाम दिया।

कहना न होगा कि न केवल जैसलमेर में, अपितु राजस्थान के प्रत्येक अंचल में राजा का यह किस्सा आज भी लोगों की जबान पर चढ़ा हुआ है। जैसलमेर के कई गांवों में तब की बनी पठियालें उस राजा की स्मृति लिये अब भी राहगीरों के लिये विश्रामगृह बनी हुई हैं। जैसलमेर शहर में उस समय की बनी धर्मशाला 'गीदड़ों की धर्मशाला' के नाम से प्रसिद्ध है। आज वह राजा नहीं है मगर उसकी अमरता के गीतड़े और भींतड़े वर्षों तक उसे याद करते रहेंगे। मेवाड़ में इन्हीं गीदड़ों से संबंधित एक बात प्रचलित है जो कलाकार दयाराम ने मुझे बताई। उसके अनुसार कहा जाता है कि पहले सियार शहर में तथा कुत्ते जंगल में रहते थे। एक दिन कुत्तों ने बैठक की कि सियार तो शहर में मौज करते हैं और हम व्यर्थ में ही जंगल में मारे-मारे फिरते हैं अत: उन्होंने शहर में जाकर सियारों को खदेड़ना प्रारम्भ किया। सियार मारे डरके भागने लगे। भागते-भागते एक बूढ़े सियार को एक आदमी ने कहा कि तुम क्यों भाग रहे हो? तुम्हारे नाम का तो शहर में रहने का पट्टा लिख रखा है। उत्तर में सियार ने कहा-पट्टा किनें बतावां। काम तो गंडकांऊं पड्यो है। (पट्टा किसको बतायें। काम तो कुत्तों से पड़ा है।) तब से सियार जंगल में और कुत्ते शहर में रहने लगे और यह कहावत चल पड़ी।

सूअर का शिकार और घोड़े का खुर

उदयपुर में सेंटपॉल स्कूल के पीछे अभयबाग में पांच अगस्त 2004 को बावजी निर्भयसिंहजी ने बताया कि उनके पितामह का घोड़ा बड़ा समझदार था। शिकार के समय घोड़े को एकबार सूअर के पीछे कर देने पर कोई निर्देश देने की जरूरत नहीं होती। वह शिकार के पीछे-पीछे चलता रहेगा जब तक कि उसका काम तमाम नहीं कर दिया जाय। जब शिकार हार कर ढीला पड़ जाता तो सवार उसे अपने साथ रखे हथियार से मार देता। कई बार घोड़ा स्वयं ही अपने पांव से, खुरों से रगड़ कर शिकार को मसल देता।

सूअर सबसे खतरनाक जानवर है। शेर तथा अधवेसरे को भी वह पटकी दे देता है। जख्मी हो जाने के बाद तो उसका खतरा अधिक बढ़ जाता है। वह इरादे का पक्का होता है। संकट में आने पर वह धैर्य नहीं खोकर सहज पराजय स्वीकार करने की बजाय या तो मरमिटता है या मारकर ही दम लेता है। जख्मी होने पर अपनी बढ़ती ताकत के कारण वह हाथी के पैरों में घुसकर उसे भी फाड़ देता है। सूअर के जोश में आने पर उसके शरीर के बड़े-बड़े बाल गन्ने की तरह खड़े हो जाते हैं।

बावजी ने बताया कि एकबार उनके पितामह ने रींछ के शिकार के लिए घोड़ा दौड़ाया। रींछ बड़ा ताकतवर था। घोड़ा उसके पीछे निडर हो भागा। अचानक रींछ के पीछे चल रहा घोड़ा गिर पड़ा। उसके साथ पितामह भी गिर पड़े। घोड़ा तो तत्काल उठ खड़ा हो गया पर पितामह नहीं उठ पाये। वे बड़ी मुश्किल से रेंगते हुए एक पत्थर पर जा बैठे। घोड़ा खड़ा-खड़ा उन्हें देख रहा था। थोड़ी देर बाद घोड़ा उनके पास गया। उसने उनके आसपास अपना मुंह फिराया। बासाहब ने घोड़े को पकड़ उठना चाहा। इस पर घोड़े ने सहयोग कर उन्हें अपनी पीठ पर बिठा लिया।

रींछ का शिकार एकबार खुद निर्भयसिंहजी ने किया। उनके साथ वाले ने जोर की बन्दूक दागी। रींछ के बन्दूक लगते ही वह जोर-जोर से चिल्लाया जैसे मनुष्य रो रहा हो। रींछ का शिकार शेर से भी अधिक खतरनाक होता है। बावजी समझे कोई आदमी मर गया है लेकिन ज्योंही उसने दूसरी बन्दूक दागी तो वे समझ गए कि कोई शिकार मारा गया है।

घोड़े के खुर में यह खासियत होती है कि ब्रह्मांड में जितनी भी ऊर्जा है वह खुर खींचकर अपने में समाहित कर लेता है। खुर तो बकरी, गाय, बैल और गधे के भी होते हैं पर यह खासियत उनमें नहीं होती।

इसीलिए घोड़े के नाल लगाते हैं ताकि नाल में वह सारी ऊर्जा समाविष्ट हो जाय। इसीलिए घोड़े की नाल की प्राप्ति के लिए लोग भटकते रहते हैं। यह नाल काले घोड़े की होनी चाहिये। इस नाल की अंगूठी बनाकर पहनी जाती है। यह अंगूठी भी बिना नाल को गर्म किये बनाई जाती है। घोड़ा कभी बैठता नहीं है। यदि कभी बैठ भी जाय तो वह ठीक नहीं समझा जाता।

महाराणा प्रताप के पास जो भाला था वह औसत भाले से बड़ा था। वजन में इतना हल्का कि दो किलो से अधिक नहीं था पर उससे प्रताप ऐसा वार करते कि जैसे सवा मण का भाला घुस गया हो। एकबार प्रताप को सूचना मिली कि चावण्ड गांव में एक शेर प्रतिदिन आकर एक गाय का भक्षण कर जाता है। प्रताप ने अपने पंजे में बाघनखा पहना और शेर का काम तमाम किया। बाघनखा पहना हाथ शेर के मुंह में डाल दिया जाता है। वह मुंह में जाकर खुलता है और शिकार को कांटों जैसी असहनीय पीड़ा देता है।

लेकिन शेर तो शेर था। मरते-मरते भी वह अपनी कारगुजारी कर गया। उसने प्रताप की आंतड़ियां तोड़ दीं जिससे दो दिन बाद ही प्रताप का निधन हो गया। इसकी सूचना लियाकत हुसैन ने अकबर को दी। जब अकबर को यह खबर मिली तो उसने अपने सिर पर हाथ दे बड़ा अफसोस व्यक्त किया। इस पर डिंगल कवि दुरसा आढ़ा ने लिखा- 'अस दागो अणदाग.....।'

गधों का माहात्म्य

यों गधा बड़ा सहनशील प्राणी होता है। पूरी उम्र भर आप उसे लादते रहें तो भी वह बिचारा कुछ नहीं कहेगा पर कभी-कभी तो आपको उसे अपनी मस्ती के लिये छोड़ना ही पड़ेगा। यह भी कहा जाता है कि उस पर जितना अधिक भार रहेगा वह उतना ही ठीक होता हुआ चलेगा। उससे किसी को क्या डर! न किसी को काटता है न किसी को दुलत्ती देता है। सींग तो उसके होते ही नहीं। प्रतिदिन कई लोग उसके नाम से शोभित होते हैं फिर भी उसने कभी कोई शिकायत नहीं की। कभी भी कोई भी उस पर सवारी करे, वह हर समय तैयार रहता है। माता शीतला का वह खास वाहन है और कुम्हारों का तो सर्वेसर्वा ही समझिये।

शीतला के लोकगीतों में गधे के कई उल्लेख आते हैं। चुरू के प्रसिद्ध अन्वेषक गोविंद अग्रवाल ने बताया कि बच्चों की माताएं अपने छोटे-छोटे बालकों को 'माताजी का गधिया' तक कहती सुनी गई हैं ताकि उसकी माताजी (चेचक) से रक्षा हो सके। इसीलिए माताजी निकलने पर बच्चों को गधे के गधलेड़े (लींडे) तथा उसकी पूंछ के बालों का धुंआ दिया जाता है। किसी जमाने में शत्रु द्वारा विरोधी सामंत के गढ़ को नष्ट कर उस पर गधों से हल चलवा देने की प्रथा थी।

सुबोधकुमार अग्रवाल ने अपनी शोधयात्रा के दौरान चुरू जिले की सुजानगढ़ तहसील में स्यानण की डूंगरी के प्राचीन अवशेषों में 'गधागाल' के अंकन पाये हैं। गुजरात -सौराष्ट्र में तो धार्मिक अथवा सार्वजनिक उपयोग की भूमि पर गधागाल के पालिये लगाने की प्रथा रही है ताकि उस भूमि को कोई हड़प नहीं पाये।

सर्दी के बाद ये गधे मस्ती में आते हैं। होली पर तो लोगबाग भी बड़े चाव से इन पर सवारी कर होली की ठिठोली को विशेष रंग देते हैं।

अपनी सर्वेक्षण यात्राओं में मैंने शीतला सप्तमी पर महिलाओं द्वारा दीवालों पर मांडे जानेवाले विविध थापों में गधे को रथ खींचते हुए देखा है। यह थापा कंकू का बना हुआ था जिसमें ऊपर की ओर चांद-सूरज बने हुए थे। रथ के नीचे दो पंक्तियों में नौ-नौ बिंदियां लगी हुई थीं। यह थापा कुमकुम का बना हुआ था। चित्तौड़ के बसी गांव में एक कुम्हार के घर यह थापा सन् 1962 के दौरान देखा गया था।

होली के दिनों में जैसलमेर-बीकानेर में आयोजित पारम्परिक ख्याल-रम्मत के विशेष अध्ययन के लिये मैं बीकानेर गया और वहां के विविधनामी चौकों में रम्मतों-ख्यालों के वैविध्यपूर्ण ख्याल-तमाशे तथा नाटक-नाट देखे पर वहां के प्रसिद्ध बारहगुवाड़ के चौक में जब बहु प्रसिद्ध पारम्परिक हिड़ाऊमेरी नामक रम्मत को देखने गया तो पूजा-विधि के पश्चात लगभग एक बजे रात्रि को यह रम्मत प्रारम्भ हुई।

प्रारम्भ में गणेश का स्वांग प्रदर्शित हुआ। उसके बाद बोहरा-बोहरी का स्वांग आया जिसमें मैंने बोहरे बने लड़के को एक गधे पर बैठा पाया। मेरे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। बोहरा-बोहरी दोनों छोटे-छोटे छोकरे ही थे। उनके साथ बच्चों का खासा झुंड था जो बोहरा और बोहरी दोनों को छेड़ रहा था। बोहरी बने लड़के के पीछे तो वे इतने पड़े कि उसकी घघरी तक खींच-खींच कर फाड़ दी मगर बोहरी जरा भी विचलित नहीं हुई। वह अंत तक हंसती-मुस्काती अपना सफल प्रदर्शन ही करती रही। बीच-बीच में दोनों के संवाद चलते फिर दर्शक लड़के अपनी बातें भी उनसे कह सुन बैठते। उनकी गीत पंक्तियां थी-

चाचा बोहरा आया रे हाथ में लोठा लाया रे
चाचा बोहरा आया रे
बाणिया रे जीमण गयो वरे पड़ग्यो टोटो रे
बोहरी सूं बाण्यो लड़ग्यो भूल आयो लोटो रे
यो बोहरो घणो खोटो रे
या बोहरी घणी खोटी रे

राजस्थान नहर के निर्माण में तो गधों का ही कमाल रहा है। यदि गधों का सहयोग नहीं मिलता तो नहर बन ही नहीं सकती थी। गधों के इसी महत्व और माहात्म्य को दृष्टिगत रखते हुए राजस्थान के नेता साहित्यकार निरंजननाथ आचार्य ने सरकार का ध्यान इन गधों की ओर आकृष्ट किया और गधों पर डाक टिकिट निकलवाने की पहल की थी। इसमें कोई आश्चर्य नहीं यदि आचार्यजी जीवित होते तो वे निश्चय ही यह कार्य करा गुजरते। गधों संबंधी कई कथा-किंवदंतियां, शकुन-अपशकुन और कहावत-किस्से प्रचलित हैं। यदि कोई गधों के पीछे ही पड़ने का पराक्रम ठान ले तो एक पी.एच.डी. उसे भी प्राप्त हो सकती है।

हास्यकवि गोपालप्रसाद व्यास ने लिखा था- 'मैं गधे चराया करता हूं।' एक किस्सा मैंने सुना कि एक हाथी कुम्हारवाड़े में चला गया। वहां सब गधे ही गधे थे। हाथी को देख उन गधों ने उसे घेर लिया। बिचारे हाथी को बड़ी दुर्गत झेलनी पड़ी। उसे सीख यह मिली कि उसे कहां, कब, कैसे जाना चाहिए, इसका विवेक उसे ही रखना होगा।

तुलसी ने सुनाया प्रताप को भरत चरित

राणा प्रताप हमारे प्रणम्य हैं। वे अकेले ऐसे वीरवर हैं जो राष्ट्रीय स्वतंत्रता और स्वाभिमान की मशाल प्रदीप्त किए हुए हैं। कुछ यही सोच मानसकार महाकवि तुलसीदास को बार-बार टंकार देता रहा और वे निकल पड़े उस स्वातंत्र्यवीर योद्धा से मिलने जो मेवाड़ की आन बान और शान का तेजोमय सूर्य बन अकबर जैसे महान बादशाह के लिए संकट का सिरदर्द बना हुआ था।

घुमावदार चक्कर देते मगरे-मगरियों और गन्नाटे देती घाटियों के बीच गफलत देती गुमनाम गुफा तक पहुंचने वाले तुलसीदास को देखकर सैनिक सहम गया। कड़कती आवाज में बाहर ही रोक दिया गया और भीतर जाकर अन्नदाता से निवेदन किया- हुजूर, लगने को तो कोई बड़ा तेजस्वी पुरूष लगता है परन्तु वह यहां क्या करने आया है। कोई गुप्तचर भी हो सकता है। अपना नाम संत तुलसीदास बता रहा है।

युग के महान कवि संत तुलसी का नाम सुनते ही महाराणा प्रताप दौड़ पड़े। निगाहें नीची झुकी हुई देख तुलसी ने प्रताप को अपनी भुजाओं में भर हिरदे से लगा लिया। बोले- आप मेरे आराध्य देव के यशस्वी वंशज हैं। आदेश दें, आपके इस राष्ट्रीय महासमर में मेरा क्या योगदान हो सकता है। रानी ने पूजा का थाल लिए संत प्रवर की आरती उतारी और राजकुमार अमरसिंह ने शीतल जल से पांव पखारे।

अपने मानस पाठ में राम-भरत-मिलाप के प्रसंग से तुलसी ने पूरे सघन वन को अश्रु विगलित कर दिया। राम के अश्रु भरत के तथा भरत के अश्रु राम के वक्षस्थल को प्रेम की पीड़ से सहला रहे हैं। प्रताप का गला रूंध गया। बोले -आपने मेरी आंखें खोल दीं। अब यह भाला मानसिंह के विरूद्ध नहीं उठेगा।

अपने पास रखा हीरा नजर करते हुए तुलसीदास ने विदा ली। आगरा पहुंचकर कविवर रहीम से सारा हाल कह सुनाया। भरत-मिलाप का वही प्रसंग उसी बुलंदगी से सुनाया तब रहीम के साथ-साथ मानसिंह की आंखें भी सजल हो उठीं। बोले -अब मेरी तलवार किसी जातीय बंधु पर नहीं उठेगी।

तुलसीदास-प्रताप की मुलाकात के इस प्रसंग का इतिहास में कहीं उल्लेख नहीं है। कहा जाता है कि तुलसीदास ने मानस के पूर्व भरत चरित की रचना की थी। बाद में जब उन्होंने सम्पूर्ण रामचरित को भाषाबद्ध करने का निश्चय किया तो अयोध्याकाण्ड के रूप में यही भरत चरित उसका दूसरा अध्याय बना जिसे विद्वानों ने मानस के रचना-प्रसंग में सर्वाधिक सुंदर तथा काव्यशास्त्रीय कसौटी पर खरा उतरने वाला माना।

हिन्दी-राजस्थानी के प्रसिद्ध साहित्यकार ओंकारश्री ने बताया कि 1977 के उनके कोलकता प्रवास के दौरान रामकथा के महान मनीषी रामकिंकर ने भी तुलसी-प्रताप के मिलन को स्वीकार किया था। इस प्रसंग को कुछ विद्वानों ने लिखा भी है। तुलसी ने तब उदयपुर से बारह किलोमीटर दूर देबारी के पास जिस कुटिया में विश्राम किया वह तुलसी कोटड़ी नाम से जानी गई। इससे पूर्व मेवाड़ की राजरानी मीरांबाई को तुलसी द्वारा जाके प्रिय न राम वैदेही शीर्षक पत्र-पद लिखने का प्रसंग प्रसिद्ध है ही। **- म. भा.**

स्मृतियों के शिखर (195) : डॉ. महेन्द्र भानावत

प्रथम बालजन्म पर सुभागपड़ा

पड़ा छोटे कपड़े पर बने मांगलिक चित्रण को कहते हैं। यह पड़ की तरह ही चित्रांकन लिए होता है। सुभागपड़ा से तात्पर्य सौभाग्य सूचक प्रथम बालजन्म पर भेजे जाने वाले सूचनापरक चित्रावण से है। मुख्यत: सवर्ण जातियों में इसका प्रचलन रहा है। विवाहित युवती का प्रथम जापा (प्रसव) उसके पीहर में होता है। उस अवस्था में बालक या बालिका के जन्म की सूचना उसके ससुराल वालों को भिजवानी होती है। सुभागपड़ा इसका माध्यम है।

सुभागपड़ा चित्रांकन करनेवाले चितेरे मांगीलाल मिस्त्री ने बताया कि सवा हाथ सम चौरस कपड़े पर सुभागपड़ा बनाया जाता है। यह पड़ा बालक और बालिका जन्म के लिए अलग-अलग प्रकार लिए होता है। इसमें मुख्यत: केन्द्र में तो पगल्याजी ही होते हैं, शेष प्रतीक चिन्ह सूरज, चांद, मंगल कलश, दीपक, दोनों पड़ों में चित्रित किए होते हैं किंतु बालिका जन्म के पड़े में मोर, चिड़िया, बंधनवार तथा हरे-भरे पौधे और फूल-पत्ती विशेष होते हैं। बालकजन्म के पड़े में कमल फूल, आम तथा तोते मुख्य अंकन लिए होते हैं और यही इन पड़ों की पहचान है। यह पड़ा नाई के साथ भेजा जाता रहा है।

सुभागपड़ा बनाने का नेग (पारिश्रमिक) चितेरा को बहुत पहले सवा रूपया तथा नारियल दिया जाता था। उसके बाद यह नेग पांच, दस से लेकर पच्चीस, पचास और सौ रूपये तक बढ़ा हुआ देखा गया। यों व्यक्ति अपनी हैसियत के अनुसार पारिश्रमिक देकर चितेरा को प्रसन्न करता है। नाई का नेग जच्चे के ससुराल वाले देते हैं। यह नेग भी चितेरा के नेग जैसा ही होता है किंतु अक्सर देखा यह गया है कि बालक के जन्म पर चितेरा और नाई दोनों ही अधिक नेग प्राप्त करते हैं। बालिका जन्म पर सबकी खुशी सीमट जाती है।

दोनों पड़ों का यदि ठीक से अध्ययन किया जाय तो पता चलेगा कि बालिका जन्म पर बननेवाला पड़ा अधिक मांगलिक और फलदायी होता है। इससे लगता है कि समाज में कन्या जन्म को किसी कदर नीचा, हीन या कि दोयम दर्जे का नहीं कहा गया है। दरअसल वंशवृद्धि की अधिकारिणी महिला ही होती है। उसके बिना गृहस्थ जीवन सुना और निस्तेज बना रहता है।

सुभागपड़ा में चित्रित चित्रों के प्रतीक अर्थ परिवार और गृहस्थ जीवन में सुख समृद्धि, आनंद मंगल और सौहार्द तथा प्रेमभाव को बढ़ावा देने वाले होते हैं। नवजात शिशु विनायक जैसा मंगलकारी, कलश जैसा आत्मनिष्ठ, सूर्य जैसा तेजोमय, चांद जैसा शांत सुखद, दीपक जैसा प्रकाशवान, तोते जैसा मृदुभाषी, मोर जैसा ज्ञानी-गुणी, चिड़िया जैसा चहकप्रिय, हंसमुख, कमल जैसा निर्मल एवं सतोगुणी, आम जैसा रससिक्त तथा बंधनवार एवं फूल-पत्ती की तरह सर्वकल्याणक एवं सुखदाता हो।

लोकजीवन में संस्कारों से जुड़ी संस्कृति की कितनी व्यापक इन्द्रधनुषावलियां देखने को मिलती हैं। इनके विविध रंग, रूप और सौहार्द सरोकार जैसा जीवन निर्माण करते हैं, वैसा परिवार और समाज यदि व्यावहारिक धरातल पर देखने को मिले तो सच्चे मायने में वसुधैव कुटुम्बकम् का सोच सार्थक हो सकता है। ऐसा सोच और समाज हमारे देश में कभी आदर्श रूप में रहा है। यही कारण है कि भारतीयता की पहचान पूरे विश्व में दखल रखती है।

छठी का थापा :

बालजन्म के छह दिन बाद नायण द्वारा दीवाल पर जो थापा बनाया जाता है उसे छठी का थापा कहते हैं। यह कुमकुम (कंकू) का होता है। इसके नीचे एक सेर के करीब धान (गेहूं), गुड़ की डली, चवन्नी (पैसा), लच्छा, काजल, कंकू तथा कलम रख दी जाती है। पास में एक कोरा (खाली) पाठा रख दिया जाता है। घी का दीपक जला दिया जाता है। यह थापा सांझ को बनाया जाता है। कहते हैं कि रात्रि को बेमाता (विधाता माता) आकर बच्चे का भाग्यांकन करती है। इस अवसर पर बच्चे के हाथ-पांव में लच्छा बांधा जाता है और आंख में काजल लगाया जाता है। इस दिन औरतें गीत गाती हैं और विधाता की कहानी कहती हैं।

गांवों में यह बेमाता 'छठी देवी' के नाम से जानी जाती है। हरियाणा प्रदेश में इसका एक नाम 'सती देवी' भी है जो बच्चा और जच्चा को आशीर्वाद देती है। अवधी क्षेत्र में छठी संस्कार को 'छठी जगो' कहते हैं। इस देवी को बच्चे अधिक प्यारे हैं। जहां वह उनका पालन पोषण करती है वहां उनकी रक्षा का दायित्व भी वहन करती है। खड़ीबोली प्रदेश में छठी को 'सतबाई' भी कहते हैं। कहा जाता है कि यह एक निशाचरी है जिसे राजी (खुश) करने के लिए पूजा की जाती है। बच्चों को किसी प्रकार का रोग नहीं हो पाये और वे सर्व प्रकार की प्रेत बाधाओं से वंचित रहें, इसलिए भी छठी का थापांकन किया जाता है।

छठी की कहानी :

इस अवसर पर छठी की मेवाड़ प्रदेश में जो कहानी कही जाती है वह इस प्रकार है-

कैलाशपुरी में एक ब्राह्मण और एक चमार रहते थे जिनकी आपस में बड़ी पक्की दोस्ती थी। दोनों के घर एक ही साथ थे। ब्राह्मण के घर चमार (चर्मकार) के घर के सामने से होकर जाने का रास्ता था। कभी-कभी ब्राह्मण चमार के घर बैठ जाता। दोनों में काफी बातें होतीं परन्तु जब ब्राह्मण उठकर चला जाता तो चमार उस स्थान पर पानी छिड़ककर उसकी सफाई करता। एक दिन ब्राह्मण ने चमार को ऐसा करते देख लिया तब उससे पूछा- मेरे उठने के बाद तुम ऐसा क्यों करते हो? चमार ने कहा - तुम निपूते (निसंतान) हो। हमारे यहां निपूते का मुंह देखना अपशकुन का प्रतीक है। मेरे छोटे-छोटे बच्चे यहां प्रतिदिन खेलते रहते हैं इसलिए मैं पानी का छिड़काव करता हूं। ब्राह्मण यह सुन उदास हो गया। घर पहुंचा। उसकी पत्नी ने जब उसे उदास देखा तो उसका कारण पूछा। ब्राह्मण ने आपबीती घटना कह सुनाई और कहा कि लछमी (लक्ष्मी) तुम्हारी सहेली है। यदि तुम उससे एक संतान मांग लो तो ठीक रहेगा। ब्राह्मणी लछमी के पास गई और अपनी बात कह सुनाई। लछमी ने कहा, यह बात मेरे बस की नहीं है। पार्वती इसके लिए ठीक रहेगी, चलो उसी के पास चलें।

दोनों पार्वती के पास पहुंची। पार्वती ने कहा कि मैं भी इस काम को नहीं कर सकती। चलो तीनों मिलकर सावित्री के पास चलें। वही इस काम को कर सकती है। तीनों सावित्री के पास पहुंचीं। सावित्री ने कहा कि यह बात मेरे भी वश की नहीं है। इसके लिए संतान देवी 'छठी' के पास चलें। चारों सहेलियां छठी के पास पहुंचीं। छठी उन्हें देखकर बड़ी प्रसन्न हुई और आने का कारण पूछा। पार्वती-सावित्री ने संतान देने की बात कही तो छठी ने कहा कि इस ब्राह्मणी के भाग्य में इस जन्म में तो क्या सात जन्म में भी संतान प्राप्ति का कहीं योग नहीं है परन्तु जब तुम सब इसीलिए आई हो तो चलो कहीं देखें। यदि कोई अपनी संतान से संतुष्ट नहीं होगा तो उसी को उठा लायेंगे।

सब मिलकर एक कुम्हार के घर गई और वहां जाकर उसके घर की दीवाल की आड़ में खड़ी हो गईं। कुम्हारिन उसी समय बाजार से बर्तन बेचकर आई। आते ही उसने फटाफट हंडिया में दलिया बनाया। उसे ठंडा किया और बच्चों को खिलाकर पूछा- किसी को भूख तो नहीं रही? बच्चों ने कहा-सब का पेट भर चूका। इतना खा लिया है कि यदि एक भाई और होता तो उसका भी पेट भर जाता।

छठी ने सहेलियों से कहा कि यहां एक बच्चे की और जरूरत है। चलो यहां से कहीं और चलें। वे वहां से एक कहारिन के वहां गई जो चने बेचकर घर लौटी ही थी। ज्योंही वह घर लौटी कि सारे बच्चे खुशी के मारे उसे देख उछल पड़े। उसने किसी के सिर पर हाथ फेर, किसी को गोद में उठाकर, किसी की पीठ थपथपाकर सबके प्रति अपना लाड़ (प्यार) प्रदर्शित किया और खाना खिलाकर सबको आराम से सुला दिया। कहारिन ने पूछा कि किसी को और आड़ने-बिछाने की आवश्यकता तो नहीं है? बच्चों ने कहा- यदि एक भाई और होता तो वह भी आराम से हमारे बीच सो सकता।

यह सुन छठी ने कहा कि यहां भी एक बच्चा और चाहिए। चलो यहां से राजा के वहां चलें। राजा का लड़का बीमार था। नौकर पंखा ढार रहे थे। लोकगीत में पंक्ति आती है- पंखीयो ढलाऊं सारी रैन। दाई दवा पिला रही थी। सब लोग परेशान थे। रानी ने कहा- हे भगवान या तो इसे ठीक करदे, नहीं तो उठाले। उसके यह कहते ही बच्चे की स्वांस जाती रही।

उसी दिन से ब्राह्मणी के गर्भ रह गया। नवें महीने उसके एक सुंदर पुत्र का जन्म हुआ। जन्म के कुछ दिन बाद सभी सहेलियां उसके पास गईं और बोली कि अब तुम्हारा बांझपन जाता रहा। इस बच्चे को वापस कर दो। ब्राह्मणी बोली- जब इसे तुमने दिया ही है तो मुझे पीलिया (बालजन्म का पहनावा, साड़ी विशेष) पहिनने दो फिर आकर ले जाना। पांच साल बीते फिर सहेलियां गई और बच्चे को देने को कहा तो ब्राह्मणी बोली कि जरा इसे बड़ा होने दो। मुझे इसके लाड़ लड़ाने दो। मैं इसे जनेऊ पहनादूं फिर आकर लेजाना।

सहेलियां लौटीं। बच्चा बड़ा हो गया। वह जो भी मांगता उसे मिल जाता। उसका यज्ञोपवित संस्कार भी हो गया। एक दिन सहेलियां फिर गईं और बच्चा मांगा। इस पर ब्राह्मणी बोली कि जब इतना रूक गई हो तो थोड़ी और सब्र करो। मुझे इसका विवाह कर लेने दो फिर लेकर चली जाना। वे चली गई। ब्राह्मणी ने उसका विवाह कर दिया। एक सुंदर सी बहू आई। बहू को समझाया कि जब उसकी सहेलियां आये तो पैर छूकर आशीर्वाद प्राप्त करना।

सहेलियां बुलाई गईं। बहू ने उनके पैर छुए। सहेलियों ने आशीर्वाद दिया- दूधां न्हाओ पूतां फलो। गंगा-जमुना की तरह तुम्हारा सुहाग अखंड बना रहे। सहेलियां जब लौटने लगीं तो उन्होंने फिर उसी बात की याद दिलाई तो ब्राह्मणी ने कहा कि अब तो बेटा बहू का हो चुका। मेरा नहीं रहा। तुम उसी से मांगो। उन्होंने जब बहू से कहा तो बहू ने कहा कि अभी तो आपने मुझे पौत्रवती और अखंड सौभाग्यवती होने का आशीर्वाद दिया और अभी इन्हें मांग बैठी। सहेलियों ने लाचार होकर हार मानली। वे चुपचाप वहां से लौट पड़ीं। उस दिन भाद्र माह की उजियाली छठ थी। ब्राहम्णी ने अपने पुत्र की रक्षार्थ उस दिन छठी के नाम से व्रत किया। दीवाल पर उसका थापा अंकित किया और विधिवत् उसकी पूजा कर अपना व्रत खोला।

ए छठी देवी जैसी ब्राह्मणी पर टूठी (तुष्ट हुई) और उसका बांझापन दूर किया वैसी ही सब पर टूठना। सबको फलाफूला परिवार देना।

बिल्ली से बचाव :

छोटे बच्चे बहुत कोमल शरीरी होते हैं। उन्हें ठीक से रखना पड़ता है। ठीक से उठाना, नहलाना तथा अन्य आवश्यक क्रियाएं करानी पड़ती हैं। कभी-कभी कोई अन्य उसे लाड़-प्यार हेतु अपने हाथों में लेते हैं तब भी वे शरीर से डगपच हो जाते हैं। प्रथम प्रसव पीहर में कराने के पीछे भी यही भावना रहती है कि प्रसविका अपनी माता तथा अन्य परिजनों के साथ निश्चिंत होकर रहे। श्वसुरजनों के साथ वे उतनी उन्मुक्त नहीं हो पाती हैं और न अपने मन की चाह भी कह पाती हैं। उनसे उसका संकोच भी रहता है। माता पिता उसे हर तरह के संस्कार देते रहते हैं। बच्चे को ठीक से पालने पोसने के गुर सीखाते रहते हैं और जच्चे-बच्चे से जुड़ी प्रत्येक क्रिया के साथ खुलकर संवाद करते हैं। मुख्यत: खानापान से संबंधित बहुतसारी बातें ऐसी होती हैं जो उसके पीहर में रहने पर ही, माता के साथ ही पूरी होनी समीचीन लगती हैं।

संतान के पैदा होने के सात-आठ माह कठिन रहन सहन के होते हैं। बच्चे का इस दौरान बहुत ध्यान रखना पड़ता है। दो-चार माह तक तो प्रसविका को बच्चे के साथ ही सोते, उठते, बैठते रहकर उसे जहां तक हो, अकेला नहीं रहने दिया जाता। सबसे बड़ा ध्यान उसे बिल्ली से बचाये रखने का होता है। कहते हैं, बिल्ली को नवजात की तीव्र गंध आती है। ऐसी स्थिति में वह उस गंध के सहारे बच्चे तक पहुंच उसे उठा ले जाती है। मैंने हर परिवार में इन दिनों प्राय: महिलाओं को जच्चा कक्ष के किंवाड़ बंद रखते देखा है ताकि कभी कोई बिल्ली वहां तक नहीं पहुंच पाये।

मेरी माताजी ने तो मुझे यह भी बताया कि बिल्ली को डाकिन की शक्ति मिली होती है। बच्चा उठाने में तो वह तनिक भी देर नहीं करती किंतु उसकी निगाह भी खराब होती है अत: उससे भी बच्चे को बचाना जरूरी होता है। बिल्ली की नजर यदि किसी बच्चे को लग जाए तो वह बीमार हो जाता है और उसकी कुदृष्टि से मुक्ति दिलाने के लिए बड़ी परेशानी उठानी पड़ती है। अड़क इलाज, टोने टोटके करने तथा देव-देवरे धोक दिलाने पर उसकी बीमारी का शमन होता है और कईबार उसे जीवन से भी हाथ धोना पड़ता है।

काजल के मामा करना

बच्चों को किसी की नजर न लग जाय इसलिए नहलाने के बाद उसके दोनों हाथों की हथेली तथा पांवों की पगथली में काजल की मोटी बिंदियां लगाई जाती हैं। ललाट के एक ओर भी ऐसी ही बड़ी बिंदी लगा दी जाती है। आंखों में काजल लगाया जाता है। हथेली में काजल लगाने का एक अर्थ यह भी है कि बच्चा यदि कोई चीज पकड़ता है तो वह उसके हाथ में नहीं आकर फिसल पड़ती है। कभी-कभी कोई नुकीली अथवा किनारेदार चीज बच्चे के हाथ लग जाती है जो उसे हानि पहुंचा सकती है। काजल ऐसी हरकतों से भी उसे बचाये रखता है।

लोई करना :

साल छह माह तक के बच्चे के शरीर पर घी की मालिश की जाती है। फिर सरसों के तेल की मालिश कर उसके प्रत्येक अंग को पुष्ट-दुरस्त बनाया जाता है। मालिश से उसके शरीर में स्फूर्ति बनी रहती है तथा नींद अच्छी आने से वह निरोगी बना रहता है। भूख भी अच्छी लगती है। मालिश करने के बाद घी-तेल उतारने के लिए उसके पूरे अंगों पर लोई की जाती है। यह लोई एक प्रकार का गूदा होता है। यह आटा, हल्दी तथा घी के मिश्रण से लचकदार बनाया जाता है। इससे जो गूदा बनता है उसे घुमा-घुमाकर लोई बना बच्चे के शरीर पर हल्का-हल्का रगड़ा जाता है जिससे उसकी रूंवारी जाती रहती है। रूंवारी हल्के फुल्के व्यर्थ के बाल होते हैं। कुछ बच्चों के लोई ठीक नहीं करने पर बड़े होने पर भी उनके पांवों तथा हाथों पर घने बाल उग आते हैं जो ठीक नहीं समझे जाते।

प्रारंभ में बच्चे को तीन साल तक माता का दूध पिलाया जाता था। अमूमन दूसरा बच्चा होने के बीच की दूरी भी तीन वर्ष रहती है किंतु यदि दूसरा बच्चा जल्दी हो गया तब पहले वाले बच्चे को मजबूरी में मां से अलग करने पर दूध देना बंद करना होता है। बहुत से बच्चे बड़े होने पर भी मां का दूध पीना नहीं छोड़ते। दांत आ जाने पर भी वे दूध पीते रहते हैं और जब पर्याप्त दूध नहीं होता है तो वे मां का स्तन भी अपने दांतों से दबा देते हैं ऐसी स्थिति में मां अपने बच्चे को न केवल डांटडपट लगाती है अपितु परेशान होकर पिटाई भी कर देती है। कई बच्चे इतने ढीठ हो जाते हैं कि मार खाने पर भी दूध पीना नहीं छोड़ते तब माताएं नीम के पत्ते बांट उसके घोल को स्तन के शीर्ष भाग, बींटड़ी पर लगा देती हैं। ऐसी स्थिति में बच्चे का मुंह कड़वा हो जाता है और वह धीरे-धीरे दूध छोड़ना प्रारंभ कर देता है।

जन्म से लेकर दो माह तक बच्चे को नीम अथवा मरवा के ढाई पत्ते पानी के साथ बांट कर गुटकी देते हैं ताकि उसका पेट साफ रहे और किसी तरह की कोई बीमारी नहीं हो।

तालवा के बाल :

निपूती महिला की कूख (कुक्षि) चले और वह भी पुत्रवती हो, इसके लिए उसे कई तरह के टोटकों से गुजरना पड़ता है। ऐसी स्थिति में वह किसी नवजात शिशु के सिर के बीच चोटीवाले हिस्से जिसे तालवा कहते हैं, से बाल चूंटकर ले जाती हैं और उन्हें जलाकर उसका पानी पी जाती है। ऐसा करने पर उसकी कूख चल पड़ती है। मुख्यत: नवजात को नहलाते वक्त ऐसी घटना होती है अत: माताएं बहुत ध्यान रखती हैं। नहलाते समय बच्चे के सिर के बाल अत्यंत कोमल हो जाते हैं और वह रोने भी लगता है। उसकी रूलाई के समय कोई तालवा के बाल उखड़ ले तो बच्चे के अधिक रोने की आशंका बनी रहती है। बच्चा अधिक देर तक रोता रहता है और चुप नहीं हो पाता है तब माताएं उसके तालवे के स्थान को देखती हैं। होशियार दाइयां ऐसी बीमारी बहुत जल्द पकड़ लेती हैं। बाल उखाड़ने के कारण उस स्थान पर खून जमा हो जाता है तब घी लगाकर, ऊंगली फेरकर बच्चे को थपथपी दे चुप किया जाता है।

पोतड़ा पहनाना :

सफेद कपड़े का छोटा सा तिकोना कपड़ा पोतड़ा कहलाता है जो नवजात का अधोवस्त्र होता है। ऐसे कम से कम 8-10 पोतड़े होते हैं जो बच्चे के गीले अथवा गंदे करते ही बदल दिये जाते हैं। इन पोतड़ों को ध्यानपूर्वक काम में लिया जाता है और सूखने पर सावधानीपूर्वक रखा जाता है। निपूती औरतें ऐसे पोतड़े चुराने में भी दक्ष होती हैं। ऐसी महिला को पोतड़ा हाथ लगने पर उसके एक किनारे के टुकड़े को लेकर जला दिया जाता है और उसकी राख को पानी में घोलकर पीने से उसकी कूख चालू हो जाती है किंतु नवजात की मां भविष्य में संतान पैदा नहीं कर पाती है।

मेरे गांव में एक पड़ोसिन की बड़ी बहू अपनी देवरानी की संतान के पोतड़े धोने गई। लौटकर जब उसकी सास ने पोतड़े गिने तो एक कम निकला फलस्वरूप तत्काल सास ने बहू को तालाब भेज पोतड़ा लाने को कहा। बहू दौड़ी-दौड़ी तालाब गई और पानी में रह गया वह पोतड़ा ढूंढकर लाई।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन
उदयपुर, सोमवार 16 दिसंबर 2024

सम्पादकीय

हवाएं देतीं त्यौहारों की आहट

सृष्टि संचार में हवाओं का बड़ा महत्त्व है। इन हवाओं के साथ ऋतुचक्र बंधा हुआ है। इसी चक्र के आधार पर षट् ऋतुओं का निर्माण हुआ है। जैसे छहों ऋतुचक्र अपनी जुदा-जुदा उपस्थिति देते हैं वैसे ही उनसे जुड़ा हवामण्डल उनके आगमन की आहट देता प्रतीत होता है। हवाओं की चाल, बहाव और स्पर्श भी बहुत कुछ संकेत देता है।

ग्रामीणजनों की हवामण्डल को पहचान, प्रकृति का सर्वानुमान लेने और तदनुसार अपना जीवन आचरित करने की अच्छी पकड़ है। प्रकृति में विचरण करने वाले प्राणी तो इसी वातावरण के साथ अपना बसेरा करने, सुरक्षित जीवन जीने की समय-शक्ति रखते हैं। कई पक्षियों, पशुओं तथा जलचर जीवों की वाणी और व्यवहार मौसमी हवाओं के साथ जुदा होने से इसकी भनक वे मानवों को भी देते रहते हैं।

कोयल का कण्ठ-स्वर, मोर का नृत्याभिनय, भंवरे का गुंजन, तितली की उन्मुक्त उड़ान, मधुमक्खी का विविध भांति फुलवारी दर्शन, कमल-कमलिनी का पूर्ण खिलन, मेढ़क की टर्र-टर्र, चिड़ियों की चहलकदमी, पपीहा की बोली, जलजीवों की रंगरेलियां सब कहीं मौसमानुकूल अनुशासित हैं।

शहरों में कहां प्रकृति-पुरुष मिलेगा जो प्रकृति से तादात्म्य रखता हो? यहां तो प्रकृति भी बांध दी गई लगती है। गांवों में हवाओं के विविध नाम, काम, उनके दर्शनों की अभिलाषी ग्रामीण जनता भी पूरी तरह उनके साथ मौसम बिहारी बनी लगती है।

सबके जुदा-जुदा गीत हैं। उन गीतों के बल पर उनका आगमन स्वागतेय होता है। खेतों में, हर फसलों में उनकी प्रतीती, उपस्थिति, अंकुरण और पूर्ण यौवन की दर्शना जो सुख देती है वह तो वहीं कल्पनातीत हुआ निहारा जा सकता है।

ऐसे लोकगीतों में भी कई संकलन निकले हैं जिनके अध्ययन से अभूतपूर्व हमारी ग्राम्य-संस्कृति के लोकाचारों का दिग्दर्शन मिलता है। ये गीत विरह को शान्त करते हैं। प्रियमिलन का सुख देते हैं। परदेश रह रहे प्रियतम को पाती भेजकर सन्देश देने का संतोष देते हैं। मन की दमित भावनाओं का इजहार कर हल्कापन देते सुखानन्द देते हैं। उदहरण-

(1) रूत आई रे पपीहा थारे बोलण री रूत आई रे।
(2) गायां चरावती गोरबंद गूंथियो,
भैंस्या चरावती पोयो-पोयो राज
म्हारो गोरबंद नखराळो।
(3) म्हारे छैल भंवर रो कांगसियो पणहार्यां ले गई रे
(4) म्हैं तो भूली हो बालीदा आपरी सेज मां
म्हारो गेंद गजरो।
(5) म्हारी मेहंदी रो रंग सुरंग
प्रेम रस मेहंदी राचणी।
(6) बादली बरसे क्यूं नी, बीजली चमके क्यूं नी ए
म्हारे भंवर सा रे हवाम्हेल में चंपो सूखे ए
(7) ओ म्हारा मांणीगर
गोरी ने मोलाइदीजो पोमचियो जी राज।
(8) केसरिया बालम आवोनी पधारो म्हारे देस
(9) खड़ी नीम के नीचे म्हैं तो एकली
जातोड़े बटाऊ म्हांने ओळेदोळे देख ली
(10) बनो तो म्हारो रामचनद्र अवतार
बनी तो म्हारी सीता जानकी।

डॉ दिनेश खराड़ी राष्ट्रीय आदिवासी समाज रत्न पुरस्कार से सम्मानित

उदयपुर (ह. सं.)। कानपुर, उत्तरप्रदेश में आयोजित आल इंडिया आदिवासी एम्प्लॉयीज फेडरेशन का 52वाँ अखिल भारतीय राष्ट्रीय अधिवेशन 2024 रविवार को आयोजित हुआ। अधिवेशन में संगठन के अध्यक्ष डॉ. दिनेश

खराड़ी को कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गोवा सरकार के एसटी एससी आयोग के चेयरपर्सन दीपक करमलकर ने राष्ट्रीय आदिवासी समाज रत्न पुरस्कार 2024 से सम्मानित किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता संगठन के केंद्रीय अध्यक्ष मधुकर उइके ने की। यह संगठन 1967 में स्थापित होकर पूरे देश में सरकारी एवं ग़ैर सरकारी आदिवासी एम्प्लॉयीज के हितों की रक्षा के लिए लगातार कार्य कर रहा है ।

अधिवेशन में राजस्थान राज्य से डॉ. खराडी के साथ संगठन के समन्वयक डॉ. सी एल भगोरा, सचिव नवीन परमार, राज्य सदस्य मुकेश मीणा, नखताराम भील एवं साथियों ने भाग लिया। अधिवेशन में उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, मणिपुर, गोवा, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, बिहार, असम एवं राजस्थान के पदाधिकारियों ने भाग लिया। अधिवेशन के आयोजन के मुख्य संयोजक मनोज गोंड, केंद्रीय संयुक्त सचिव एवं राज्य महासचिव उत्तरप्रदेश थे। कार्यक्रम का संचालन केंद्रीय सह कार्यालयाध्यक्ष देवीदास उर्फ़ देवा पंवार ने किया।

मिनरल उद्योग पर ट्रांजिट पास व्यवस्था हटाने से 20 जिलों के मिनरल ग्राइंडिंग उद्योग को राहत मिली

उदयपुर (ह. सं.)। ऑल राजस्थान मिनरल प्रोसेसरस एसोसिएशन के पदाधिकारियों ने कहा कि राजस्थान के 20 जिलों के मिनरल ग्राइंडिंग उद्योग से जुड़े उद्यमियों को मिनरल उद्योग पर ट्रांजिट पास व्यवस्था हटाने से राहत मिली है। इसके लिए राजस्थान की सरकार का आभार जताते हैं। यह बात रविवार को ऑल राजस्थान मिनरल प्रोसेसरस एसोसिएशन के अध्यक्ष गोपाल अग्रवाल, महासचिव रोहित मेहता ने पत्रकार वार्ता में कही।

अध्यक्ष गोपाल अग्रवाल ने कहा कि पूर्व में मिनरल उद्योग पर लागू की गई उक्त व्यवस्था का राजस्थान के करीब 20 जिलों में कार्यरत मिनरल ग्राइंडिंग उद्योग के लोगों ने पुरजोर विरोध किया था। इस व्यवस्था के खिलाफ ऑल राजस्थान मिनरल प्रोससर्सोर्स एसोसिएशन के माध्यम से पूर्व में माननीय उच्च न्यायालय में याचिका दायर की गई थी।

माननीय उच्च न्यायालय ने मौखिक रूप से स्थगन आदेश प्रदान किया था तथा राज्य सरकार को कहा था कि इसको वापस रिव्यू करें लेकिन सरकार का रवैया सकारात्मक नहीं रहा तब एसोसिएशन द्वारा ज्ञापन दिया गया जिस पर तत्काल जिला कलेक्टर ने मुख्य सचिव को ट्रांजिट पास व्यवस्था को अव्यवहारिक बताते हुए उद्योग हित में समाप्त किए को लेकर मिनरल उद्यमियों की बात सरकार तक पहुंचाई। फलस्वरुप तत्कालीन मुख्य सचिव ने उद्योग विभाग एवं खान विभाग को एक कमेटी बनाकर इस पर रिव्यू किए जाने का आदेश दिया।

रोहित मेहता ने बताया कि उस समय बनाई गई कमेटी ने भी सरकार को इस व्यवस्था को बदलने की सिफारिश की। तत्कालीन नेता प्रतिपक्ष और वर्तमान पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया ने स्वयं अतिरिक्त मुख्य सचिव सुबोध अग्रवाल से मुलाकात की जिसमें कि उन्होंने खनिज उद्योगों पर लागू की गई इस व्यवस्था को समाप्त करने की मंशा जाहिर की लेकिन सरकार ने उद्योगों को पलायन करने की दिशा में धकेलते हुए उच्च न्यायालय में दिए गए अपने हलफनामा से बदलते हुए उद्योगों पर जबरदस्त आर्थिक भार डालते हुए 25000 वार्षिक शुल्क व 10 रुपए प्रति ट्रांजिट पास का शुल्क लगा दिया। इसके खिलाफ पुनः संगठन व अध्यक्ष गोपाल अग्रवाल द्वारा उच्च न्यायालय में याचिका दी गई एवं सरकार को 15 दिवस में यह व्यवस्था समाप्त करने वह आर्थिक भार नहीं लगाए जाने का माननीय उच्च न्यायालय ने आदेश दिया जिस पर सरकार द्वारा आचार संहिता लग जाने के कारण कोई कार्रवाई नहीं हुई।

राजस्थान में नई सरकार के आते ही मुख्यमंत्री व खान मंत्री के समक्ष मामला लाया गया। स्थानीय स्तर पर निदेशक, अतिरिक्त निदेशकों व खनिज अभियंता के संज्ञान में उक्त विषय लाया गया फलस्वरुप स्थानीय स्तर की सिफारिश को जयपुर भेजा गया। स्टेक होल्डर से मीटिंग के क्रम में खान सचिव टी रविकांत ने बैठक में उक्त विषय को गंभीरतापूर्वक सुनकर इसे समाप्त करने की ओर बढ़ाने का आश्वासन दिया। नई खनिज नीति 2024 में खनिज के परिवहन पर लागू की गई ट्रांजिट पास व्यवस्था समाप्त किए जाने की घोषणा की गई। इससे व्यापार जगत में हर्ष की लहर है साथ ही आने वाले समय में मिनरल ग्राइंडिंग उद्योगों को एक नया आयाम मिलने की पूरी संभावनाएं बनी है। संगठन के अध्यक्ष गोपाल अग्रवाल ने लागू की गई नई मिनरल पॉलिसी इंडस्ट्रियल पॉलिसी साथ ही साथ एम-सेंड पॉलिसी का स्वागत करते हुए सरकार को धन्यवाद ज्ञापित किया। सभा में महासचिव रोहित मेहता, उपाध्यक्ष प्रकाश फुलानी, कोषाध्यक्ष राजेंद्र पुरोहित, सह सचिव आशीष मित्तल, सह कोषाध्यक्ष अशोक ओझा, पलाश वैश्य, गिरीश भगत, राकेश नाहर, सुरेश जैन, सुनील छाजेड़, अशोक बंसल, राकेश मिश्रा, मुकेश गोदावत, प्रकाशचंद्र जैन, दीपक सुखेजा, अनुराग माहेश्वरी, अशोक चौहान, विय जैन, विनोद जैन उपस्थित रहे व सरकार को धन्यवाद् ज्ञापित किया।

उल्लेखनीय है कि ऑल राजस्थान मिनरल प्रोसेसरस संगठन के वर्तमान में 145 सदस्य हैं जिन्हें भविष्य में 1000 तक ले जाने का लक्ष्य है। यह संगठन उद्योग जगत एवं सरकार के बीच एक सेतु के रूप में कार्य करने का प्रतिबद्ध है।

इससे पहले ऑल राजस्थान मिनरल प्रोसेसरस एसोसिएशन का स्नेह सम्मेलन एवं धन्यवाद ज्ञापित कार्यक्रम रविवार को फील्ड क्लब में आयोजित किया गया। इसमें बड़ी संख्या में पूरे राजस्थान के अनेक संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सभा में सरकार द्वारा पूर्व में लागू की गई ट्रांजिट पास व्यवस्था को एलिमिनेट करने का स्वागत किया।

नयन सुख के लिये इतना तो करें

-डॉ. भंवरलाल शर्मा -

आपकी आंखों पर यदि काली पट्टी बांध दी जाये तो कल्पना करें आपको कैसा अनुभव होगा। आप कुछ भी न देख पायेंगे सिवा अंधेरे के और थोड़ी देर में ही आपको अटपटा लगेगा तब आप स्वयं ही अपने हाथों से उस बांधी पट्टी को हटा कर ही सहज महसूस करेंगे। वस्तुत हमारी आंखें स्वस्थ हो और परम पिता के बनाये संसार को देख पायें तो मन हर्षित होता है। इससे हमें आंख से देख पाने का महत्व समझ में आता है। इसलिये हमारा आपका यह दायित्व है कि जीवन पर्यन्त हम देखते रह सके। हमारी आंखें स्वस्थ बनी रहे तो ऐसे उपाय हमें करने चाहिये जिससे हमारे ऋषियों की बतायी उक्ति पश्येम शरद शतम् सत्य हो सके।

सर्व प्रथम तो हमें अपने आहार विहार पर ध्यान देना पड़ेगा। अधिक मिर्च मसाले और खटाई का सेवन कम करना पड़ेगा। लाल मिर्च का अधिक प्रयोग आंखों के लिये अत्यन्त हानिकर है। दूसरे बहुत रोशनी या बहुत कम प्रकाश में पढ़ना लिखना छोड़ना पड़ेगा। सोते हुए पढ़ना अथवा चलती बस या ट्रेन में पढ़ना भी उचित नहीं है। तमाम रोगों की जड़ है पेट की खराबी।

यदि कब्ज़ रहता है तो त्रिफलां आदि का सेवन कर पेट ठीक करना चाहिये। रेशेदार सब्जियां और चोकर समेत आटे से बनी रोटी भी इसमें सहायक है। आजकल जो जंक फूड का प्रचलन बढ़ गया है यह भी चिन्ता का विषय है। अधिक मात्रा में चाय काफी, सिगरेट और शराब को भी छोड़ना पड़ेगा। देशी गाय के दूध और घृत का उपयोग आंखों के लिये फायदेमंद है। दांतों का आंखों की ज्योति से संबंध है इसलिये प्रतिदिन सुबह शाम दातुन करने की आदत बनानी आवश्यक है। तंग जूते या रबर सोल वाले जूते आंख के लिये ठीक नहीं। ठण्डी हवा के झोंकों और लू से आंखों को बचाना चाहिये। धूल धुंआ और तेज धूप भी आंख के लिये ठीक नहीं।

आजकल लोग घन्टो कम्प्यूटर पर बैठ कर काम करते हैं। उन्हें भी बीच में काम छोड़ कर आंखों को विश्राम देना चाहिये। ठण्डे पानी के छींटो से आंख की थकान मिटती है।

ऐसी चीजों को देखने से बचना चाहिये जिसे देखने से आंखें चौंधिया जाती है। सूर्य की ओर देखने से आंखें खराब हो जाती है। तेज धूप में घूमना फिरना भी ठीक नहीं। हरियाली का आंखों से सीधा सकारात्मक संबंध है। प्रातः सूर्योदय से पूर्व उठ हरे भरे बाग बगीचों में घूमना चाहिये। हरी दूब पर नंगे पांव घूमना और भी अच्छा है। उदय होते सूरज की तरफ मुंह करके दस पन्द्रह मिनिट भगवान भास्कर की रश्मियों का सेवन आंखों के लिये बहुत लाभकारी है। पैरों के तलुओं पर सुबह शाम सरसों के तेल की मालिश हमारी दृष्टि क्षमता को बनाये रखती है। जो लोग इस क्षमता को बनाये रखना चाहते हैं उन्हें जलनेति क्रिया रोज करनी चाहिये। एक नासापुट से जल पीकर दूसरे निकालने की क्रिया को जल नेति कहते हैं। शुरू में थोड़ा गड़बड़ होगा किन्तु थोड़ा अभ्यास होने के बहुत सहजता से यह संभव है। आवश्यक हो तो किसी जानकार से सहयोग लिया जा सकता है।

त्राटक क्रिया एक तरह का आंखों का व्यायाम है जिसमें सुखासन में बैठ कर एक दो फिट की दूरी पर आंखों की सीध में दीये की लौ या एक कागज पर बना काला बिन्दु एकटक देखना होता है। यह भी आंखों के लिये बहुत अधिक उपयोगी क्रिया है। उपवास का उल्लेख भी है ।

पर्याप्त जल पीना, दूध और फलाहार पर रहने से दोषों का पाचन होता है। पाचन प्रणाली सही होती है। इसका भी प्रभाव आंखों के स्वास्थ्य के लिये सहायक है। आजकल हम भोजन के बाद नेपकिन या तौलिये से हाथ पौछते है। यह सही नहीं है। भोजन के बाद गीले हाथों से आंखों को स्पर्श करना चाहिये। यही विज्ञान सम्मत भी है। इस विषय में हमारे संहिता कार क्या कहते हैं। चलते चलते उन्हें समझ लेना उचित होगा।

अविधारितवेगस्य भजतोअजन नावनम्। त्यजत क्रोधशोकौच तिमिरों नाश्नुते ने रम्। अर्थात् मल मूत्र के वेग को न रोकने वाले, प्रतिदिन आंखों में सुरमा आंजने वाले, कड़वे तैल का नाश लेने वाले तथा क्रोध शोक और चिन्ता न करने वाले व्यक्तियों को आंखों के रोग नहीं होते।

त्रिफला मश्नतौरात्रौ संस्कृत वियतो घृतम्।

मुक्त्या वा पिवतस्तोयं तिमिर लघुशाम्यति।

रात्रि में त्रिफला चूर्ण शहद के साथ चाटने अथवा त्रिफला डाल कर घी पका लेने से और भोजन के बाद पानी न पीने या कम पीने से आंख के रोग नहीं होते।

त्रिफला के पानी से आंखें धोने और त्रिफला घृत के सेवन से आंखों की रोशनी बढ़ती है और आंखें स्वस्थ रहती है।

दृष्टि है तो दुनियां है। इसलिये हमें हर संभव प्रयास करना चाहिये कि हमारी आंखें जीवन भर स्वस्थ रहें।

- लेखक पूर्व जिला आयुर्वेद अधिकारी

शृंगार : सौंदर्य और फैशन संस्कृति का अहम हिस्सा

- शिखा अग्रवाल -

शृंगार, सौंदर्य, प्रेम की अभिव्यंजना हर युग में प्रचलित रही है। इनके बदलते स्वरूपों ने फैशन का रूप धारण किया। देखा जाए तो ये सभी धारणाएं प्राचीन काल से ही हमारी संस्कृति का हिस्सा रही हैं। शृंगार और फैशन हर समाज में प्रचलित रहे हैं। वेशभूषा और इसका बदलाव भी शृंगार का अंग है। नारी ही नहीं पुरुष भी सुंदर दिखने के लिए युगानुसार शृंगार कर परिधान धारण करते हैं।

आधुनिक समय में शृंगार और फैशन के स्वरूपों में तेजी से परिवर्तन होता रहता है। दुरुस्त जंगलों में निवास करने वाले आदिवासी भी इस से अछूते नहीं हैं। यह जरूर है कि उनके शृंगार आज पर पारंपरिक रूप से मौलिकता लिए हुए हैं। उनके शृंगार के तौर तरीके और अनूठेपन से हम आश्चर्यचकित हो जाते हैं। शृंगार और परिधान से के सौंदर्य से ही प्रेम की भावना पुष्पित और पल्लवित होती है। प्यार की भावना का उदय ही समाज को एकता के सूत्र में पिरोती है और आपसी सद्भाव और भाईचारे को बढ़ाने में अमूल्य योगदान करती है।

भारतीय सौन्दर्य चिन्तन में नारी केन्द्र बिन्दु है, जहाँ से रूप के समस्त लक्षणों-शोभा, कान्ति, लावण्य आदि की परिभाषाएँ और सौन्दर्य की व्याख्या आदि प्राप्त होती है। हर युग में नारी के सौंदर्य में वृद्धि के लिए श्रृंगार, के विविध उपाय किये गये हैं ।

महिलाओं के लिए श्रृंगार करना उनके लिए गर्व का विषय है। वैसे तो आमतौर पर वे प्रतिदिन सजती-संवरती हैं परन्तु जब भी किसी पार्टी, समारोह और विवाह में शामिल होने के लिए जाना हो तो ब्यूटी पार्लर उनकी पहली राह होती है। कोई भी पर्व हो वे रुचि पूर्वक श्रृंगार करती हैं। भाल पर बिन्दी, होठों पर लिपिस्टिक, हथेलियों और पैरों को मेंहदी और आलते से सजाना, बालों को डाई कर काले करना, बालों को विभिन्न प्रकार के डिजाइन से सजाना और विविध प्रकार चेहरे को सुंदर बनाना श्रृंगार के लोकप्रिय माध्यम हैं।

सर पर मांगफूल टीका, नाक में लोंग या नथ, कानों में झुमके, रिंग या कर्णफूल, गले में हार, मोतियों की माला, पेंडल वाली चैन, हाथों में चूड़ियां, चूड़े, अंगुलियों में अंगूठी, कमर में लटकन, पैरों में पायल और बिछिया जैसे सोने, चांदी, नगीने आदि से निर्मित आभूषण धारण कर सजती-संवरती हैं। विविधि प्रकार की वेशभूषा नारी सौंदर्य में वृद्धि करती है।

महिलाओं के आधुनिक श्रृंगार की रूपरेखा के साथ हम पाते हैं की महिला श्रृंगार की परम्परा उतनी ही प्राचीन है जितना हमारी सभ्यता और संस्कृति। युग और काल कोई भी रहा हो नारी श्रृंगार की परम्परा बदलाव के साथ निरंतर चलती रही।

प्राचीन समय से ही महिलाओं के सोलह श्रंगार की चर्चा आज तक है। हमारा समृद्ध साहित्य नारी श्रृंगार के वर्णन से परिपूर्ण है। प्राचीन मन्दिरों पर उंकेरी गई नारी मूर्तियां और विभिन्न चित्र शैलियों में आलेखित चित्रों में न केवल उस समय के नारी श्रृंगार वरन पुरुष श्रृंगार का व्यापक और प्रचलित स्वरूप बखूबी दर्शाया गया है। साहित्यकारों और कवियों ने अपनी रचनाओं में श्रृंगार, सौंदर्य और प्रेम को प्रमुखता से अपना विषय बनाया है।

सोलह श्रृंगार की अवधारणा :

भारतीय साहित्य में सोलह श्रृंगार (षोडश श्रृंगार) प्राचीन परम्परा का विवरण देखने को मिलता है। आदि काल से ही स्त्री और पुरुष दोनों प्रसाधन करते आए हैं। प्रसाधन कला का रूप इतना व्यापक था कि प्रसाधक और प्रसाधिकाओं का एक अलग वर्ग ही बन गया था। इनकी तुलना हम वर्तमान के ब्यूटिशियनों से कर सकते हैं।

जिस प्रकार ब्यूटिशियन विविध सामग्री से सजती-संवारती हैं उसी प्रकार प्रसाधक और प्रसाधिकाएं विविध उपायों से श्रृंगार करते थे। प्राचीन समस्त श्रृंगार के वर्णन और दृश्य हमें प्राचीन साहित्य, मूर्तिकला और चित्रकला में देखने को मिलते हैं। साहित्य में वर्णित श्रृंगार की बानगी देखिए -

'अंगशुची, मंजन, वसन, माँग, महावर, केश। तिलक भाल, तिल चिबुक में, भूषण मेंहदी वेश।। मिस्सी काजल अरगजा, वीरी और सुगंध।

तात्पर्य है शरीर के अंगों में उबटन लगाना, स्नान करना, स्वच्छ वस्त्र धारण करना, माँग भरना, महावर लगाना, बाल संवारना, तिलक लगाना, ठोढ़ी पर तिल बनाना, आभूषण धारण करना, मेंहदी रचाना, दांतों में मिस्सी, आँखों में काजल लगाना, सुगांधित द्रव्यों का प्रयोग, पान खाना, माला पहनना, नीला कमल धारण करना।

अंगराग और सुगन्ध :

हमारा देश आरम्भ से ही धर्म प्रधान देश रहा है। अत: अंगराग और सुगन्ध की रचना और उपयोग को तामसिक वासनाओं का उत्तेजक न मानकर, समाज कल्याण और धर्म प्रेरणा के साधन रूप में सौंदर्य प्रसाधन माना गया है। वैदिक साहित्य, महाभारत, बृहत्संहिता, निघंटु, सुश्रुत, अग्नि पुराण, मार्कण्डेय पुराण, शुक्रनीति कौटिल्यकृत, अर्थशास्त्र, अमर कोश आदि में विविध अंगरागों और सुगन्धों का रचनात्मक और प्रयोगात्मक वर्णन पाया जाता है, जिसमें दर्पण निर्माण कला, उद्वर्तन (उबटन), विलेप, धूलन, चूर्ण, पराग, तेल, दीपवर्ति, गंधोदक, स्नानीय चूर्णवास, मुखवास आदि का विधान सम्मिलित है।

अंगरागों को तैयार करने के लिये राज प्रासादों में प्रसाधक और प्रसाधिकाएँ नियुक्त होती थी। वे न केवल विशेष अंगराग तैयार किया करती थी और उसका शृंगार कार्य भी करती थी। द्रौपदी को एक वर्ष का अज्ञातवास काटना पड़ा था तो वह रानी सुदेष्णा की दासी बनकर प्रतिदिन उसके लिये विशेष अंगराग तैयार करती थी और उसका शृंगार कार्य भी करती थी।

प्राचीनकाल भारत की महिलाएं स्नान से पूर्व तेल-मर्दन (तेल मालिश) करवाती थी। त्वचा को स्निग्ध और कोमल रखने के लिये तरह-तरह के उबटनों का प्रयोग करती थी। यहां तक कि यौवन के प्रदर्शन के लिए सफेद बालों को काला रंगने की प्रथा भी प्रचलित थी। केश चमकाने के लिए सुगंधित तेल प्रयोग में लाये जाते थे।

होठों को लाल और सुगन्धित बनाये रखने के लिये अलक्तक रस (आलता), तम्बाकू (पान) और मुखवास का प्रयोग किया जाता था। शरीर को सुगठित, सुडौल और सुगन्धित बनाये रखने के लिये बादाम के तेल और बादाम की खली का सुगन्धित लेप बनाकर लगाया जाता था। त्वचा को कान्तियुक्त और कोमल बनाये रखने के लिये उत्तम आहार के प्रति भी विशेष ध्यान दिया जाता था।

मुख्य प्रसाधन के लिये विलेपन और अनुलेपन, उद्वर्तन, रंजक चक्रिका, दीपवर्ति आदि, सिर के बालों के लिये विविध प्रकार के तेल, धूप और केश-पटवास आदि। आँखों के लिए काजल, सुरमा और प्रसाधन शलाका आदि, होंठों के लिये रंजक शलाकाएं, हाथों और पांवों के लिये मेंहदी और महावर (आलता), शरीर के लिये चन्दन, देवदारू और अगरू आदि के विविध लेप तथा शरीर के अन्य अंगों के लिये सुगन्धित तेल और इत्र, दन्त प्रसाधन के लिये अनेक प्रकार के मंजनों का विधान था, जिसके लिये अनुभवी शास्त्रज्ञों द्वारा प्रसाधकों तथा प्रसाधिकाओं को विशेष रूप से प्रशिक्षण दिया जाता था।

स्नान विधियां :

स्नान करने की कई विधियां साहित्य ने वर्णित हैं। सबसे अधिक लोकप्रिय जलविहार या जलक्रीड़ा था। अधिकांशत: स्नान के जल को पुष्पों से सुरभित कर लिया जाता था जैसे आजकल (बाथ सॉल्ट) का प्रयत्न किया जाता है। एक प्रकार के साबुन का भी प्रयोग होता था जो (फेनक) कहलाता था और जिसमें से झाग भी निकलते थे।

बताया जाता है मुगल काल में नूरजहां जिस जल कुंड में स्नान करती थी उसे पहले गुलाब के फूल डालकर सुगंधित किया जाता था और शाम को फूल निकाल दिए जाते थे। एक रात गुलाब के फूल पानी में ही रह गए। सुबह जब नूरजहां ने देखा तो पानी पर सुगधित चिकनाई तैर रही थी। बताया जाता है इसी से गुलाब के इत्र का पता लगाया गया।

नहाने के बाद नर-नारी स्वच्छ वस्त्र धारण करते थे। पुरुष एक उत्तरीय और अधोवस्त्र पहनते थे और स्त्रियां चोली और घाघरा। यद्यपि वस्त्र रंगीन भी पहने जाते थे तथापि प्राचीन नर-नारी श्वेत उज्जवल वस्त्र अधिक पसंद करते थे। वस्त्रों को सोने, चाँदी और रत्नों का काम कर और भी सुंदर बनाने की अनेक विधियां प्रचलित थी। शाही वस्त्रों की खूबसूरती हमें देश के हर संग्रहालय में देखने को मिलती है।

वस्त्र धारण कर सभी सुहागवती महिलाएं सिंदूर से मांग भरती थी। सिंदूर के स्थान पर

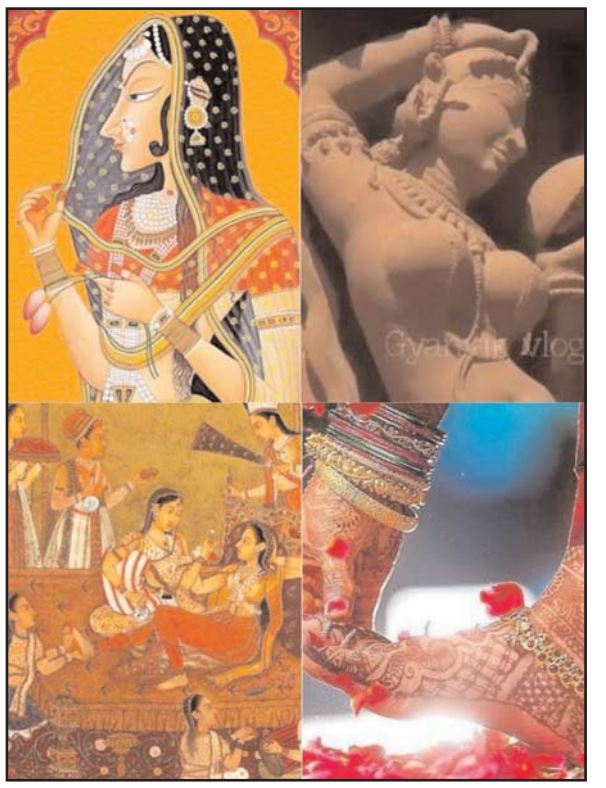

कभी-कभी फूलों और मोतियों से भी मांग सजाने की प्रथा थी। अधिकतर विवाहित स्त्रियों के श्रृंगार प्रसाधनों का उल्लेख मिलता है, बालिकाओं का नहीं।

केस सज्जा :

केश सज्जा बाल संवारने हर युग के अपने तरीके और प्रकार थे। स्नान के बाद केशों से जल निचोड़ा जाता था। स्नान कराते हुए, वस्त्र धारण कराते हुए, केश से जल निचोड़ते, प्रसाधन करते हुए, चेहरा दर्पण में देखते हुए आदि अनेक दृश्य पत्थर की मूर्तियों और चित्रकला में देखने को मिलते हैं।

सूखे बालों को धूप और चंदन के धुँए से सुगंधित कर अपने समय के अनुसार अनेक प्रकार की वेणियों, अलकों और जूड़ों से सजाया जाता था। बालों में मोती और फूल गूँथने का आम रिवाज था। विरहिणियाँ और परित्यक्ता वधुएँ सूखे अलकों वाली ही काव्यों में वर्णित की गई हैं; वे प्रसाधन नहीं करती थी।

महावर लगाने की रीति तो आज भी प्रचलित है, विशेषकर त्यौहारों अथवा मांगलिक अवसरों पर नाखून और पैर के तलवे रचाए ही जाते थे और इसे होठों पर लगाकर आधुनिक लिपस्टिक का काम भी लिया जाता था। होठों पर महावर लगाकर लोध्रचूर्ण छिड़क देने से अत्यंत मनमोहक बनाया जाता था।

मुख प्रसाधन :

मुँह का प्रसाधन तो नारियों को विशेष रूप से प्रिय था। इसके (पत्ररचना), विशेषक, पत्रलेखन और भक्ति आदि अनेक नाम थे। लाल और श्वेत चंदन के लेप से गालों, मस्तक और भवों के आसपास अनेक प्रकार के फूल-पत्ते और छोटी- बड़ी बिंदियां बनाई जाती थी। इसमें गीली या सूखी केसर या कुमकुम का भी प्रयोग होता था। मुंह को सुगंधित करने के लिए स्त्री और पुरुष दोनों ही तांबूल या पान खाते थे। राजाओं की परिचारिकाओं में तांबूलवाहिनी (पान लाने वाली) का भी विशेष स्थान था। प्रसाधन में फूलों के प्रतिमहिलाओं का विशेष प्रेम था जो वर्तमान में भी प्रचलित है। जूड़े, वेणियों, कानों, हाथों, बाहों कलाइयों और कटिप्रदेश में कमल, कुंद, मंदार, शिरीष, केसर आदि के फूल और गजरों का प्रयोग करती थी।

नीला कमल :

श्रृंगार का सोलहवां अंग है नीला कमल। स्त्रियां पूर्वोक्त पंद्रह श्रृंगारियों से सज्जित होने पर पूर्ण विकसित पुष्प या कली के दंड सहित धारण करती थी। नीले कमलों का चित्रण प्राचीन मूर्तिकला और चित्रकला में साफतौर पर देखा जा सकता है। नील कमल धारण करने का राजस्थान में किशनगढ़ चित्र शैली की बनिठनी चित्र और अजंता की गुफाओं में पद्मपणि का चित्र विशेष उल्लेखनीय है जिसमें कर में नीलकमल धारण किया दर्शाया गया है।

सोलह श्रृंगार की कुछ धारणाएं :

षोडश श्रृंगार की चर्चा खूब होती है पर हमारे सामने साहित्य के जितने भी प्रसंग हैं उनको देख कर लगता है कि इसकी कोई निश्चित परिभाषा अथवा सूची नहीं है। समय के साथ-साथ इनमें परिवर्तन होता रहा। प्राचीन संस्कृत साहित्य में षोडश श्रृंगार की गणना वल्लभदेव की सुभाषितावली में प्रथम बार सामने आती है। इसके अनुसार सोलह श्रृंगार में मज्जन, चीर, हार, तिलक, अंजन, कुंडल, नासामुक्ता, केशविन्यास, चोली (कंचुक), नूपुर, अंगराग (सुगंध),कंकण, चरणराग, करधनी, तांबूल तथा करदर्पण (आरसो नामक अंगूठी) को शामिल किया गया है।

सोलहवीं शती में श्री रूपगोस्वामी के उज्वलनीलमणि में श्रृंगार की यह सूची में स्नान, नासा मुक्ता, असित पट, कटि सूत्र (करधनी), वेणीविन्यास, कर्णावतंस, अंगों का चर्चित करना, पुष्पमाल, हाथ में कमल, केश में फूल खोंसना, तांबूल, चिबुक का कस्तुरी से चित्रण, काजल, शरीर पर पत्रावली, मकरीभंग आदि का चित्रण, अलक्तक और तिलक को शामिल किया गया है जो पहली सूची से कुछ भिन्न है।

काव्य में श्रृंगार :

हिंदी कवियों में जायसी के अनुसार सोलह श्रृंगार में मज्जन, स्नान (जायसी ने मज्जन, स्नान को अलग रखा है), वस्त्र, पत्रावली, सिंदूर, तिलक, कुंडल, अंजन, अधरों का रंगना, तांबूल, कुसुमगंध, कपोलों पर तिल, हार, कंचुकी, छुद्रघंटिक एवं पायल को शामिल किया गया है।

इसी प्रकार रीतिकाव्य के आचार्य केशवदास ने भी सोलह श्रृंगार की गणना कुछ भिन्नता के साथ की है। नगेंद्रनाथ वसु ने हिन्दी विश्वकोश में इन श्रृंगारों में उबटन, स्नान, वस्त्रधारण, केश प्रसाधन, काजल, सिंदूर से मांग भरना, महावर, तिलक, चिबुक पर तिल, मेंहदी, सुगंध लगाना, आभूषण, पुष्पमाल, मिस्सी लगाना, तांबूल और अधरों को रंगना बताया गया है।

सोलह श्रृंगार की गणना यद्यपि भिन्नता रखती है पर यह स्पष्ट है कि सोलह श्रृंगार का किसी न किसी रूप में प्रचलन रहा है जो साहित्य, स्थापत्य और चित्रकला में साफ दिखाई देता है।

वक्त को बदलते देखा है

गुज़रते वक्त के साथ
वक्त को बदलते देखा है,
ग़म को खुशी में,
खुशी को ग़म में बदले देखा है,
उम्मीद की रोशनी में नहाते चेहरों को
चिंता के कोहरे में डूबते देखा है,
चेहरे की मुस्कुराहट को
उदासी में बदलते देखा है,
आँखों में कभी सुकून,
तो कभी
आँसुओं के दरिया को बहते देखा हैं,
काँपते हाथों को थामते देखा है,
लड़खड़ाते लोगो को सहारा देते देखा है,
भगवान में अटूट विश्वास भी देखा है,
तो खुदा के सामने फेली चादर को भी देखा है,
नानक के सदके में झुका सर मैंने देखा है,
कराहतीं आवाज़ें जो सीने को चीर देती थी
उन्हें ख़ामोश होते आज मैंने देखा है,
जिंदगी और मौत के बीच की झीनी सी चादर
को
आज बहुत करीब से देखा है,
गुज़रते वक्त के साथ
वक्त को बदलते देखा है।

- हेमेन्द्र सेठ

समाचार / विचार

एसपीएसयू ने 'क्यूएस आई-गेज' के साथ शुरू की वैश्विक उत्कृष्टता की यात्रा की शुरूआत

- ऐसी पहल करने वाला उदयपुर का पहला विश्वविद्यालय -

उदयपुर (ह. सं.)। अकादमिक उत्कृष्टता और समग्र विकास के लिए प्रतिबद्ध सर पदमपत सिंघानिया विश्वविद्यालय (एसपीएसयू) की ओर से अकादमिक और संस्थागत प्रदर्शन के मूल्यांकन के लिए राष्ट्रीय स्तर की मान्यता प्राप्त एजेंसी 'क्यूएस आई-गेज' के साथ अपने साझा सहयोग की घोषणा की। यह घोषणा लेकसिटी मॉल के ग्राउंड फ्लोर स्थित एसपीएसयू के सिटी ऑफिस में एसपीएसयू अध्यक्ष और कुलपति प्रो. पृथ्वी यादव, क्यूएस आई-गेज के मेनेजिंग डायरेक्टर श्री रविन नायर, क्यूएस आई-गेज के एसोसिएट डायरेक्टर सिरिल बेंज और क्लाइंट रिलेशंस की एसोसिएट डायरेक्टर सुश्री सेजल एस जोधावत की मौजूदगी में हुई। एसपीएसयू उदयपुर का पहला विश्वविद्यालय है जिसने यह पहल की है।

शिक्षा, अनुसंधान और नवाचार में अंतरराष्ट्रीय मानकों को प्राप्त करने की एसपीएसयू की प्रतिबद्धता के तहत यह साझेदारी की गई है। क्यूएस आई-गेज की साक्ष्य-आधारित कार्यप्रणाली शिक्षण, शोध, नवाचार और छात्र सहायता जैसे क्षेत्रों में 100 से अधिक संकेतकों से विश्लेषण करने की क्षमता का उपयोग एसपीएसयू अपनी ताकत की पहचान करने और सुधार की आवश्यकता वाले क्षेत्रों को उजागर करने में करेगा।

एसपीएसयू अध्यक्ष और कुलपति प्रो. पृथ्वी यादव ने इस अवसर पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि क्यूए रेटिंग में शामिल होना भविष्य के लीडर्स को सशक्त बनाने की दिशा में कदम बढ़ाना है। एसपीएसयू को शिक्षा का वैश्विक केंद्र बनाने के हमारे दृष्टिकोण का यह स्वाभाविक विस्तार भी है। यह यात्रा अकादमिक और शोध उत्कृष्टता के लिए हमारे अटूट समर्पण को दर्शाती है। यह पहल एसपीएसयू के अपने शैक्षिक पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ाने के लिए सक्रिय दृष्टिकोण को भी दर्शाती है। मूल्यांकन से जो अंतर्दृष्टि प्राप्त होगी उससे हर क्षेत्र में प्रतिस्पर्धात्मक संस्थागत सुधार व समग्र प्रगति को गति मिल सकेगी। छात्रों के लिए, क्यूएस आई-गेज रेटिंग एक मूल्यवान संसाधन के रूप में काम करेगी। यह उन्हें गुणवत्ता और प्रतिस्पर्धात्मकता के लिए विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा को उजागर करते हुए अपनी शैक्षणिक यात्रा के बारे में उचित निर्णय लेने में सक्षम बनाएगी।

क्यूएस आई-गेज के मेनेजिंग डायरेक्टर रविन नायर ने कहा कि एसपीएसयू के साथ हमारा जुड़ाव शैक्षिक गुणवत्ता बढ़ाने के लिए हमारी साझा प्रतिबद्धता को दर्शाता है जबकि क्यूएस आई-गेज रेटिंग प्रक्रिया संस्थानों को ताकत वाले क्षेत्रों और सुधार के अवसरों की पहचान करने में सशक्त बनाती है, यह छात्रों के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में भी काम करती है। प्रत्येक संस्थान के अद्वितीय गुणों में डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि प्रदान करके, हमारी रेटिंग छात्रों को उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज़ों के आधार पर सूचित निर्णय लेने में सक्षम बनाती है - चाहे वह कार्यक्रम की गुणवत्ता, संकाय विशेषज्ञता, या परिसर सुविधाएं हों। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि हमारी रेटिंग सीधे संस्थानों की तुलना करने के लिए नहीं बनाई गई है, बल्कि उनकी विशिष्ट शक्तियों और विकास के क्षेत्रों को उजागर करने के लिए डिज़ाइन की गई है, यह सुनिश्चित करते हुए कि संस्थान और छात्र दोनों निरंतर सुधार और भविष्य की सफलता पर ध्यान केंद्रित करके निर्णय ले सकते हैं। मैं एसपीएसयू को इस गुणवत्ता मूल्यांकन को अपनाने के लिए बधाई देना चाहता हूं जो उनके छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने की उनकी प्रतिबद्धता का प्रमाण है।

क्यूएस आई-गेज की एसोसिएट डायरेक्टर-क्लाइंट रिलेशंस सुश्री सेजल एस जोधावत ने कहा कि क्यूएस आई-गेज बेंचमार्किंग से उत्कृष्टता की संस्कृति को बढ़ावा मिलता है। भारत के उच्च शिक्षा संस्थानों और स्कूलों को यह सर्वोत्कृष्टता की ओर ले जाता है। एसपीएसयू उदयपुर के साथ इसका मूल्यवान सहयोग वैश्विक मानकों को स्थानीय प्राथमिकताओं के साथ जोड़कर, पारदर्शिता व जवाबदेही को बढ़ावा देने और रैंकिंग व शैक्षिक उत्कृष्टता में निरंतर वृद्धि को बढ़ावा देने के लिए समान परिवर्तनकारी परिणाम प्रदान करने की तैयारी है।

एसपीएसयू द्वारा गुणवत्ता मूल्यांकन का निर्णय राष्ट्रीय मानकों के साथ तालमेल बिठाने और उत्कृष्टता की संस्कृति को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता को रेखांकित करता है। यह पहल भारतीय उच्च शिक्षा परिदृश्य में अग्रणी बनने के विश्वविद्यालय के दीर्घकालिक दृष्टिकोण के साथ सहज रूप से संरेखित है। सर पदमपत सिंघानिया विश्वविद्यालय का क्यूएस आई-गेज के साथ जुड़ाव इसकी शैक्षणिक और संस्थागत उत्कृष्टता की दिशा में निर्णायक क्षण है। इस पहल के माध्यम से, एसपीएसयू विश्व स्तरीय शैक्षिक अनुभव प्रदान करने और उच्च शिक्षा में गुणवत्ता के लिए मानक स्थापित करने के लिए समर्पण की पुष्टि करता है।

नेक्सस सेलिब्रेशन मॉल में उत्तरी ध्रुव की यात्रा का जादुई अनुभव

उदयपुर (ह. सं.)। इस क्रिस्मस सीज़न में नेक्सस सेलिब्रेशन मॉल उत्तरी ध्रुव की शानदार यात्रा का अनुभव लेकर आया है। फेस्टिव सीज़न के जादुई ऐहसास के साथ यहां रोमांचक आकर्षण मिलेंगे जो हर उम्र के आगंतुकों के लिए यादगार बन जाएंगे। 13 दिसंबर 2024 से 19 जनवरी 2025 तक नेक्सस सेलिब्रेशन मॉल, उदयपुर में जर्नी टू नॉर्थ पोल वॉक थ्रू के लिए रु. 199 तथा ऐक्टिविटीज़ के साथ वॉक थ्रू के लिए रु. 399 शुल्क के साथ प्रवेश किया जा सकता है।

वीआर स्ले राईड सवारी कराएगी सेंटा क्लॉस की गाड़ी की। मंत्रमुग्ध कर देने वालो विंटर लैंडस्केप में यह वर्चुअल रियलिटी अनुभव हैरान कर देगा। रेंडियर के संग हवा में तैरिए और शानदार उत्तरी ध्रुव में खो जाईए। ऐंटिग्रेविटी/टॉप्सी-टर्वी फोटो-ऑप एक ऐसी दुनिया है जहां गुरुत्वाकर्षण आपकी मर्ज़ी के मुताबिक काम करता है और आपकी कल्पनाशीलता को मुक्त छोड़ देता है। यहां आप ऐसी फोटो खींच सकते हैं जो आपके प्रियजनों व मित्रों को चकित कर देंगी। फेस्टिव टिकर डिस्प्ले गतिशील, हॉलीडे थीम वाले डिस्प्ले आपके सफर में चमक और जोश घोल देंगे और आप सम्मोहित हो जाएंगे। इस हॉलीडे सीज़न को यादगार बनाने के लिए अपने परिवार व मित्रों के साथ नेक्सस सेलिब्रेशन मॉल में आकर उत्तरी ध्रुव की यात्रा का आनंद ले सकते हैं।

अप्रैल तक टल सकती है ब्याज दरों में कटौती

उदयपुर (ह. सं.)। एचडीएफसी बैंक की प्रिंसिपल इकोनोमिस्ट साक्षी गुप्ता ने कहा कि वैश्विक अनिश्चितता, रूपये एवं घरेलू मुद्रास्फीति पर बढ़ते दबाव के चलते रिवर्ज बैंक ऑफ इंडिया ने अप्रैल नीति तक किसी भी ब्याज दर में कटौती को टाल सकता है एवं पूर्व निवारक कार्रवाई के बजाय विवके एवं धर्य को प्राथमिकता दे सकता है। साक्षी गुप्ता ने आरबीआई की मॉनेटरी पॉलिसी कमेटी की मीटिंग में लिये गये फैसलों पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुऐ कहा कि अगले आने वाले हफ्तों में अगर विकास की गति सार्थक रूप से बढ़ने में विफल रहती है, तो ब्याज की दरों में कटौती की संभावना बरकरार रह सकती है।

आरबीआई ने आज की नीति में प्रतीक्षा और निगरानी रुख का विकल्प चुना, जिससे सेवा के अनुरूप उसका रुख और नीति दर अपरिवर्तित रही। केंद्रीय बैंक ने मूल्य स्थिरता प्राप्त करते हुए विकास पर सतर्क रहने की आवश्यकता के बीच अपने संचार में सफलतापूर्वक एक बढ़िया संतुलन बनाया। विकास पूर्वानुमान को 60 आधार अंकों से घटाकर 6.6 प्रतिशत कर दिया गया, जबकि मुद्रास्फीति को 2024-25 के लिए 4.8 प्रतिशत तक संशोधित किया गया। हमें उम्मीद है कि वित्त वर्ष 25 में जीडीपी वृद्धि औसतन 6.4 प्रतिशत रहेगी, जिसमें वर्ष की दूसरी छमाही में कुछ तेजी आएगी। आज की नीति में अधिक महत्वपूर्ण घोषणा सीआरआर में 50 आधार अंकों की कटौती के माध्यम से तरलता की स्थिति के लिए समर्थन के संदर्भ में हुई, जिससे सिस्टम में 1.1 लाख करोड़ रुपये की तरलता जुड़ने का अनुमान है। हाल के दिनों में टैक्स आउटफ्लो, फॉरेन आउटफ्लो और अधिक मुद्रा रिसाव के कारण बैंकिंग प्रणाली की तरलता दबाव में आ गई है। हम उम्मीद करते हैं कि आरबीआई लंबी अवधि के फाइन ट्यूनिंग ऑपरेशन, ओपन मार्केट ऑपरेशन और अपने एफएक्स हस्तक्षेपों को निष्फल करने सहित विभिन्न उपायों के माध्यम से तरलता के लिए अधिक 'टिकाऊ' समर्थन प्रदान करना जारी रखेगा।

स्विगी ने की 'बोल्ट' सर्विस की शुरुआत

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के अग्रणी ऑन-डिमांड कन्वीनियंस प्लेटफॉर्म स्विगी लि. ने उदयपुर में 10 मिनट में फूड डिलीवर करने की सर्विस बोल्ट का विस्तार किया है। बोल्ट सर्विस लोकप्रिय रेस्टोरेंट एवं क्यूएसआर से मात्र 10 मिनट में डिलीवर करते हुए फ्रेश एवं क्रिक-टु-प्रिपेयर फूड्स की डिलीवरी को नए सिरे से परिभाषित कर रही है। स्विगी ने देशभर में 400 से ज्यादा शहरों में बोल्ट सर्विस का विस्तार किया है और 40,000 से ज्यादा रेस्टोरेंट्स के माध्यम से 10 लाख से ज्यादा फूड आइटम्स डिलीवर कर रही है। उदयपुर के ग्राहक शहर के 314 रेस्टोरेंट्स के 13 क्यूजिन्स की 5.3 हजार डिशेज में से अपनी पसंदीदा डिश ऑर्डर कर सकेंगे।

स्विगी के नेशनल बिजनेस हेड सिद्धार्थ भाकू ने कहा कि 'बोल्ट' सर्विस स्विगी की तरफ से एक नया इनोवेशन है, जिसका उद्देश्य देशभर के ग्राहकों को अद्वितीय सहूलियत प्रदान करना है। बोल्ट सर्विस के अंतर्गत यूजर्स को बर्गर, स्नैक्स, बेकरी आइटम्स, बेवरेज, मिठाई, आइस क्रीम, ब्रेकफास्ट आइटम्स और बिरयानी जैसे बेहद लोकप्रिय क्यूजिन्स में से चुनने का मौका मिलता है। इन्हें तैयार करने में न्यूनतम समय लगता है या इनकी डिशेज रेडी टु पैक होती हैं। ग्राहकों को केएफसी, मैकडॉनल्ड्स, सबवे, क्योरफूड्स, फासूस और बर्गर किंग जैसे राष्ट्रीय और बर्गर फार्म एवं मार्टिनोज पिज्जा जैसे क्षेत्रीय ब्रांड्स से ऑर्डर करने का विकल्प मिलेगा। ग्राहक बावर्ची, द बेक अफेयर, पंचमुखी रेस्टोरेंट, दिल पंजाबी ढाबा, ढाबा सेक्टर-14, दिल पंजाबी 3 जैसे शीर्ष रेस्टोरेंट्स से ऑर्डर कर सकेंगे। उदयपुर में कुल ऑर्डर्स में से 5.4 प्रतिशत से ज्यादा हिस्सेदारी बोल्ट की है।

फ्लिपकार्ट की सप्लाई चेन ऑपरेशंस एकेडमी ने कौशल विकास की योजना बनाई

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के घरेलू ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस फ्लिपकार्ट ने ई-कॉमर्स सप्लाई चेन में काम करने वालों को प्रशिक्षण एवं प्रमाणपत्र प्रदान करने के लिए अनूठी पहल करते हुए 2021 में सप्लाई चेन ऑपरेशंस एकेडमी (एससीओए) की स्थापना की थी। एससीओए में स्थानीय क्षेत्रों के वंचित समुदायों के युवाओं को निशुल्क एवं उद्योग के अनुरूप प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है, जिससे वे तेजी से बढ़ते ई-कॉमर्स सेक्टर में सफल होने और स्थानीय सप्लाई चेन इकोसिस्टम को मजबूत करने में सक्षम बनें। एससीओए ने 2024 में 3,000 से ज्यादा लोगों को प्रशिक्षित किया, जिनमें 20 प्रतिशत से ज्यादा महिलाएं हैं। ये आंकड़े विविधता एवं समावेश की दिशा में फ्लिपकार्ट की प्रतिबद्धता को दिखाते हैं। यहां प्रतिभागियों को फ्लिपकार्ट के विभिन्न केंद्रों पर 45 दिन के हैंड्स-ऑन एक्सपीरियंस और ऑनलाइन क्लासरूम सेशन के माध्यम से रियल-वर्ल्ड ऑपरेशनल स्किल्स प्रदान की जाती हैं। इस विशेष प्रोग्राम के माध्यम से स्थानीय युवाओं, महिलाओं, दिव्यांगों, सैन्य कर्मियों और ट्रांसजेंडर समुदाय के लोगों तक पहुंचा जाता है और उन्हें ई-कॉमर्स सेक्टर में रोजगार पाने में सक्षम बनाया जाता है।

फ्लिपकार्ट के सीनियर वाइस प्रेसिडेंट और सप्लाई चेन, कस्टमर एक्सपीरियंस एवं री-कॉमर्स के प्रमुख हेमंत बद्री ने कहा कि फ्लिपकार्ट लाखों स्थानीय कंपनियों को उनके ई-कॉमर्स के सफर में योगदान देने और देश के समावेशी विकास में सहभागी बनने के लिए प्रतिबद्ध है। सप्लाई चेन ऑपरेशंस एकेडमी (एससीओए) का उद्देश्य छात्रों एवं संभावित पेशेवरों को ई-कॉमर्स, रिटेल एवं वेयरहाउसिंग सेक्टर में काम करने के लिए उपयुक्त कौशल प्रदान करना है। यह पहल भारतीय युवाओं को तेजी से बढ़ते ई-कॉमर्स सेक्टर के लिए जरूरी कौशल प्रदान करने के लिए समर्पित है।

कोटक सिक्योरिटीज ने 2025 के लिए मार्केट आउटलुक जारी किया

उदयपुर (ह. सं.)। कोटक सिक्योरिटीज लिमिटेड ने 2025 के लिए अपनी मार्केट आउटलुक रिपोर्ट जारी की। इस रिपोर्ट में मैक्रो-इकोनॉमिक दृष्टिकोण के साथ-साथ इक्विटी, कमोडिटी और करेंसी आउटलुक को भी शामिल किया गया है, जिन पर निवेशक आने वाले साल में ध्यान दे सकते हैं।

कोटक सिक्योरिटीज के एमडी और सीईओ श्रीपाल शाह ने कहा कि भारत दुनिया की सबसे तेज़ी से बढ़ती प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में अपनी स्थिति बनाए हुए है, जो इसे वैश्विक निवेशकों के लिए एक आकर्षक निवेश स्थान बनाता है। हम भारत की दीर्घकालिक विकास क्षमता पर पूरा भरोसा करते हैं, लेकिन इसके साथ ही हम निवेशकों को सतर्क आशावाद के साथ बाजार में दृष्टिकोण अपनाने की सलाह देते हैं। हमें उम्मीद है कि 2025 में इक्विटी बाजार को और गति मिलेगी और कमोडिटी अपने ऐतिहासिक उच्चतम स्तर को पार करेंगी। साथ ही, युवा निवेशकों का शेयर बाजार में शुरुआती निवेश के जरिए संपत्ति बनाने का बढ़ता रुझान बाजार की ग्रोथ में योगदान देगा। कोटक सिक्योरिटीज मार्केट आउटलुक 2025 रिपोर्ट में 2025 के लिए मुख्य प्रवृत्तियों और प्रभावों का विवरण दिया गया है।

बीएन विधि संकाय का संसदीय दौरा : लोकसभा सत्र का लिया अनुभव

उदयपुर (ह. सं.)। बी. एन. विश्वविद्यालय के विधि संकाय के 32 विद्यार्थियों ने भारत के संसद भवन का

शैक्षणिक भ्रमण किया। यह भ्रमण माननीय चित्तौड़गढ़ सांसद व पूर्व बीजेपी राजस्थान अध्यक्ष सी.पी.जोशी के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। छात्रों ने लोकसभा की कार्यवाही को देखा, जहां संविधान पर एक विशेष सत्र चल रहा था। सत्र की कार्यवाही के अवलोकन के बाद सांसद सी.पी.जोशी ने विद्यार्थियों से मुलाकात की तथा फोटो भी लिया। बी.एन. विश्वविद्यालय के चेयरपर्सन प्रो. कर्नल शिवसिंह सारंगदेवोत, बी.एन.संस्थान के सचिव प्रो. महेंद्र सिंह राठौड़, प्रबंध निदेशक मोहब्बत सिंह राठौड़, और रजिस्ट्रार डॉ. निरंजन नारायण सिंह राठौड़ ने छात्रों को इस शैक्षणिक यात्रा के लिए शुभकामनाएं दीं। इस यात्रा के दौरान विधि संकाय के अधिष्ठाता डॉ. आशुतोष पितलिया, डॉ. अनिला, डॉ. किरण चौहान, डॉ. पुष्पलता डांगी और अभिमन्यु चौहान भी उपस्थित थे। छात्रों ने इस अनुभव को अत्यंत ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायक बताया।

प्रथम बालजन्म.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

सास ने नसीहत देते उसे कहा कि वह भविष्य में ऐसी गलती कभी न करे। पोतड़ा ज्यों-ज्यों पानी में गलता जाता है त्यों-त्यों बालक का शरीर गलता जाता है और अंत में पोतड़े की तरह उसका शरीरांत भी हो सकता है।

हंसली डिगना :

बच्चे को उठाते समय, गोद में लेते समय या दूसरे के हाथ में देते समय एक हाथ उसकी गर्दन के नीचे और दूसरा कमर के नीचे हथेली में देना होता है। इससे उसके शरीर का बैलेंस बना रहता है। जब यह बैलेंस गड़बड़ा जाता है तब मुख्यत: उसके गर्दन तथा कंधे की हड्डी फिसल जाती है। ऐसी स्थिति में बच्चा बड़ी बेचैनी महसूस करता है। वह रोता रहता है। मां का दूध तक पीना छोड़ देता है। हड्डी के फिसलाव से जो बीमारी हो जाती है उसे हंसली डिगना कहते हैं।

डॉ. दिनेश खराड़ी ने बताया कि हंसली डिगने से तात्पर्य हड्डी का अपनी जगह से सरक जाना होता है। यह एक प्रकार का डिसलोकेशन है जब हड्डी अपनी जोड़ से अलग हो जाती है। कभी-कभी छोटे बच्चों की मांशपेशियां दबी रहने पर ऐंठन आ जाती है जिससे बच्चे का हिलनाडुलना रूक जाता है। ऐसी स्थिति में बच्चे को एक चादर में सुलाकर उसको दोनों ओर से दो व्यक्ति दोनों हाथों में एक-एक पल्ला (किनारा) पकड़ झुलाने की क्रिया करते हैं।

उस चादर में बच्चा इधर-उधर गुड़िन्दे खाता झुलता हुआ अपने को अच्छा महसूस करता है। धीरे-धीरे उसकी रूलाई (रूदन) जाती रहती है और झुलाते-झुलाते ही बच्चा नींद पकड़ लेता है। समझा जाता है कि बच्चे की हंसली ठिकाने लग गई है। इस क्रिया को नरग निकालना कहते हैं।

बच्चों की हंसली डिग जाने पर मामा एक पांव पर खड़ा रहकर चांदी की हंसली पहनाता है। चमड़े की डोरी गले में पहनाते हैं। काले डोरे में शेर का नाखून पहनाते हैं। शव के आगे न्यौछावर करने वाले सिक्के पहनाते हैं। शेर का नाखून सुनार से चांदी की सूप (पतरड़ा) में जुड़वाकर मुझे भी पहनाया गया जिसे आज भी मैंने संभाल रखा है। सांस चलने पर मंत्रित मादलिया गले में बांधते हैं। बादला (निमोनिया) चलने पर फिया कालेजा होने पर कांचली की कस गर्म कर दोनों भौहों के बीच की जगह दागते हैं जिसे चमरक्या चेंटाना कहते हैं। खांसी (निमोनिया) होने पर गाय अथवा गाडर मूत्र गर्मकर हल्दी के साथ पिलाते हैं। जुवां पड़ने पर बच्चा मुंह से लार निकलता है तब निमोलियों का तैल लगाते हैं। सीताफल के बीजों का तैल भी लगाते हैं।

लासण जूण :

पूर्वकाल में बीमारियों की पहचान और उनका इलाज दोनों का बड़ा अभाव था अत: हर बीमारी का इलाज डाम (दग्ध चिन्ह) से किया जाता था। यहां तक कि जानवरों तक का इलाज भी डाम देने की क्रिया से होता। उदयपुर के पास बड़ी में मैं एक समझेबुझे ऐसे व्यक्ति से मिला जिसने अपनी साठ वर्षीय आयु में लगभग एक लाख से अधिक लोगों का डाम देकर इलाज किया। बच्चों का इलाज भी इसी पद्धति से होता।

मेरे खुद के नाभि की जगह दो दग्ध चिन्ह अभी भी बरकरार है जो मेरी बहुत छोटी उम्र से है। ये डाम रोगी की अवस्था और आवश्यकता के अनुसार स्थान विशेष पर सुई की नोक से लेकर चिमटे जैसे लोहे के औजार को गर्म कर लगाये (दागे) जाते थे।

छोटे बच्चों की अकाल मृत्यु हो जाती है या जिस माता के बच्चे जीवित नहीं रहते हैं वह अपने मृत बच्चे के शरीर के किसी अंग पर काजल, हिंगलू, घी, तैल, कुंकुम में से किसी एक का निशान लगा देती है ताकि अगला जन्म वह जहां भी ले, उसके उस स्थान पर वह चिन्ह उभर आए और वह बच्चा दीर्घायु प्राप्त करे। जो निशान मृत बच्चे के जिस रंग का लगाया जाता है वही रंग उसके अगले जन्म में उभार दिये रहता है। इस चिन्ह को लासण कहते हैं।

यही नहीं, मृत्यु होने के पश्चात बच्चे को धरती पर सुलाया जाता है। जिस स्थान पर उसे सुलाया जाता है वहीं उसे श्मशान ले जाने के पश्चात साफ छना हुआ आटा फैलाकर छलनी से ढक दिया जाता है। जब दागिये मृतक का श्मशानी कार्य सम्पन्न कर घर लौटते हैं तब वह छलनी हटाकर आटे पर उभर आया चिन्ह देखते हैं जो उस मृतक बच्चे के अगले जन्म का सूचक होता है कि वह किस योनी में गया है।

यह क्रिया जूण कहलाती है। ऐसी स्थिति में आटे पर कोई सर्प, पेड़, पशु, पक्षी अथवा मानवाकृति दिखाई देती है। समझेबुझे इस आकृति से उस मृतक के अगले जूण (जन्म) का पता लगा लेते हैं।

नामकरण का झमेला :

किसी भी विवाहिता की प्रथम संतान उसके पीहर में ही होती है। संतान होने को जापा जनना कहते हैं। प्रसवावस्था से किसी महिला का गुजरना बहुत दुष्कर और अत्यधिक परेशानी वाला कहा जाता है। यह स्थिति किसी भी महिला का नया जन्म धारण करना कही जाती है।

बालजन्म होने पर पीहरवाले नाना-नानी बच्चे का नामकरण अपनी मर्जी से, प्यार के उमड़ाव के साथ करते हैं किंतु वही संतान जब उसके पितृगृह जाती है तब उसका अन्य नाम रखा जाता है जो ज्योतिषी के अनुसार जन्म तिथि, राशि को ध्यान में रखा जाकर होता है। कई बार एक संतान के उसके पितृगृह का तथा ननिहाल का दिया नाम अंत तक चलता रहता है। ऐसे दो-दो नाम के कई बच्चे होते हैं। इस नाम को घर का दिया नाम कहा जाता है। अब तो स्कूल में दाखिला देते समय का नाम अलग रखा जाता है।

सगाई के वक्त जब नामे जोड़े मिलाये जाते हैं तब भी यदि बच्चे के पितृगृह के नाम से उसका नामा-जोड़ा नहीं मिल रहा होता है तब चलता नाम, नाना के घर के दिये नाम से उसके नामे जोड़े मिलाकर उनके सगाई सगपण तथा विवाह का मुहूर्त निकाला जाता है। यह सब व्यक्ति ने अपनी मनचाही स्थिति अपने अनुकूल बनाने के लिए सुविधा की दृष्टि से स्वीकारा है। देवता भी कहते हैं कि जब किसी के जन्म और मृत्यु की कोई निश्चत तिथि नहीं होती है तब उसके लिए मुहूर्त आदि निकालने की आवश्यकता नहीं है।

प्रसूता का खानपान :

बालजन्म के बाद सर्वाधिक ध्यान जापावाली (प्रसूता) पर दिया जाता है। उसका खानपान कैसा हो, रहन सहन कैसा हो, जहां वह रह रही है वह स्थान उसके अनुकूल है या नहीं, जापेवाली को किन-किन बातों का ध्यान रखना होता है, किन-किन चीजों से परहेज रखना है। कुल मिलाकर जच्चा बच्चा दोनों स्वस्थ रहें, इसी चर्चा और देखभाल में मुख्यत: परिजन महिलाओं का अधिक ध्यान रहता है। इस कार्य में पुरूष की भूमिका नहीं के बराबर ही रहती है। महिलाएं ही ध्यान रखती हैं और प्रसूता की खोजखबर लेती रहती हैं।

बच्चे के जन्म होते ही सर्वप्रथम उसे गुड़ मिश्रित हल्का नवाया (गर्म) पानी पिलाया जाता है। यों किसी न किसी तरह से गुड़ की मात्रा अधिक दी जाती है ताकि उसके शरीर में गर्माहट रहे और किसी तरह की बाहरी हवा का प्रवेश न हो पाये। प्रसूता का सिर भी कपड़े से बांध दिया जाता है ताकि सिर-दर्द न हो पाये और न कोई हवा ही लग सके। गुड़ के पानी के बाद चाय पिलाई जाती है। लगभग सप्ताह भर किसी तरह का खाद्य पदार्थ नहीं दिया जाता।

मुहूर्त के अनुसार सात दिन के बाद सूरज पूजने का संस्कार किया जाता है तब पहलीबार जच्चा-बच्चा को बाहर निकाल अन्य महिलाओं के सम्मुख लाया जाता है। सूर्य पूजन के बाद प्रसूता को दवाई के रूप में सप्ताह भर सूंठ के लड्डू खिलाये जाते हैं। सूंठ बारीक पीस-छानकर उसे घी से हल्की आंच पर सेक दी जाती है फिर उसमें गुड़ या शक्कर और कांईपर मिलाई जाती है। इसे स्वादिष्ट बनाने के लिए मेवा (बादाम, काजू) मिलाये जाते हैं। कांइपर स्वाद में अत्यंत तुरा होता है अत: लड्डू के साथ मावा तथा खोपरा मिला दिया जाता है। यह पदार्थ खाने में अच्छा नहीं लगता अत: इसके साथ बाफे हुए मसालेदार मूंग या चने का पापड़ दिया जाता है। यह सिर की अचूक दवा कही जाती है। इसके लेने से प्रसूता सिर की बीमारी से बची रहती है।

इसके बाद बत्तीसा खाने को दिया जाता है। बत्तीसा बत्तीस प्रकार की जड़ी बूटियों का मिश्रण कर तैयार किया जाता है। यह सामग्री पंसारी के पास मिल जाती है। पंसारी हर दवा की मात्रा जानता है। इस सामग्री को घर की महिलाएं हमाम दस्ते में खांड-पीटकर (अब मिक्सी में पीसकर) तैयार करती हैं। इसके खाने से प्रसूता में धीरे-धीरे शक्ति का संचार होता है। इसके बाद शरीर की ठंडाई के लिए हल्दी और फिर लोद या जीरा दिया जाता है।

यह दवाई ले चुकने के बाद अंत में गूंद (गोंद) खाने को दिया जाता है। गांवों से धावड़ी गोंद मंगवाकर हल्की आंच के घी में उसे डाला जाता है जिससे वह मकई की तरह फूल जाता है। इसे गोंद के दाने के फूले पाड़ना कहते हैं। इन फूलों को आपस में हाथ से मसलकर खोपरा और शक्कर मिला दी जाती है। इसके खाने से शरीर में ठंडक बनी रहती है। पिछली दवाइयों से शरीर में जो गरमाहट फैल जाती है उसका, इससे दाब रहता है।

फ्लिपकार्ट ने अग्रणी सेलर्स को सम्मानित किया

उदयपुर (ह. सं.)। भारत के घरेलू ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म फ्लिपकार्ट ने अपने प्रतिष्ठित फ्लिपस्टार्स 2024 अवार्ड समारोह के दौरान अपने 14 लाख सेलर्स की उपलब्धियों का जश्न मनाया। समारोह का आयोजन लीला पैलेस, जयपुर में किया गया। सुनील ग्रोवर की मेजबानी में आयोजित कार्यक्रम में प्रसिद्ध गायिका शलमली खोलगड़े ने अपनी खास प्रस्तुति से सभी को लुभाया। फ्लिपकार्ट सेलर्स के रेजिलिएंस, इनोवेशन एवं उद्यमिता की भावना के सम्मान में आयोजित इस कार्यक्रम के दौरान फ्लिपकार्ट के एसवीपी एवं हेड ऑफ मार्केटप्लेस, बीजीएम, होम एंड ग्रॉसरी बिजनेस श्री साकेत चौधरी व अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

फ्लिपकार्ट के एसवीपी एवं हेड ऑफ मार्केटप्लेस, बीजीएम, होम एंड ग्रॉसरी बिजनेस साकेत चौधरी ने कहा कि फ्लिपस्टार्स अवार्ड्स फ्लिपकार्ट का सालाना उत्सव है, जिसमें फ्लिपकार्ट सेलर्स की उपलब्धियों और ग्राहकों की संतुष्टि एवं कारोबार के विकास में उनके योगदान का सम्मान किया जाता है। 2024 के आयोजन में बीजीएम, इलेक्ट्रॉनिक्स, होम, फैशन, लाइफस्टाइल, फर्नीचर एवं अप्लायंसेज जैसी विभिन्न श्रेणियों में विशिष्ट उपलब्धियों को सबके समक्ष रखा गया। इस पुरस्कार समारोह के लिए मेट्रो, टियर 2 एवं टियर 3 शहरों में कुछ अहम मानकों के आधार पर सेलर्स का मूल्यांकन किया गया था। फ्लिपकार्ट पूरे भारत में ई-कॉमर्स को सुगम बनाने का लक्ष्य लेकर चल रहा है और हमारे सेलर्स इसकी अहम कड़ी हैं। यह कार्यक्रम ग्राहकों की संतुष्टि एवं बिजनेस इनोवेशन में उनके उल्लेखनीय योगदान को रेखांकित करता है। फ्लिपकार्ट में हम ऑनलाइन कारोबार को सुगम एवं लाभकारी बनाने के लिए अपने सेलर्स को अत्याधुनिक टूल्स, बेहतर नीतियों और अद्वितीय समर्थन के माध्यम से सशक्त करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। सभी विजेताओं और प्रतिभागियों को मैं बधाई देना चाहता हूं, जिन्होंने इनोवेशन एवं गठजोड़ की भावना प्रदर्शित की है। साथ मिलकर हम ई-कॉमर्स के भविष्य को आकार दे रहे हैं और मजबूत डिजिटल इकोनॉमी के विकास में योगदान दे रहे हैं, जिससे भारत के लाखों लोगों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

उत्कृष्ट 23 बालिकाओं को साईकिल वितरित

उदयपुर (ह. सं.)। जीवन में अनुशासन, प्रतिबद्धता और नियमितता के माध्यम से हर मुकाम पर पहुंचा जा सकता है। इसके लिए इच्छा शक्ति का होना अनिवार्य है। ये विचार राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सिन्दू में उत्कृष्ट विद्यार्थियों को निशुल्क साईकिल वितरण समारोह में राजस्थान विद्यापीठ के

कुलपति कर्नल प्रो. शिवसिंह सारंगदेवोत ने बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि विद्यापीठ सिन्दू विद्यालय को गोद लेगा और साहित्यिक, खेलकूद एवं अकादमिक गुणवत्ता को बढ़ाने में अपना सहयोग देगा। विद्यापीठ में अध्ययन करने वाली बालिका को फीस में 50 प्रतिशत की छूट एवं निशुल्क पुस्तकें उपलब्ध कराई जायेगी।

प्रधानाचार्य उमेश माहेश्वरी ने बताया कि राज्य सरकार की योजना के अनुसार 23 बालिकाओं को साईकिल का वितरण किया गया। अध्यक्षता करते कुल प्रमुख भंवरलाल गुर्जर ने कहा कि आप सभी देश की भावी पीढ़ी है अत: पूरी ईमानदारी के साथ आगे बढ़ना है। उन्होंने कहा कि ग्राम पंचायत गांव में जगह उपलब्ध करायेगी तो विद्यापीठ द्वारा महाविद्यालय भी खोलने का प्रस्ताव ले सकती है। कार्यक्रम का संचालन सुरेश टांक ने किया। इस अवसर पर पुष्कर मालवीय, रमेश पटेल, ज्योति कुमावत, नीलू अग्रवाल सहित विद्यालय के विद्यार्थी सहित गांव के प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

राज्य सरकार का एक वर्ष पूर्ण होने पर राज्य स्तरीय महिला सम्मेलन आयोजित
राज्य सरकार का एक वर्ष महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा और कल्याण को समर्पित : मुख्यमंत्री

उदयपुर (सुजस)। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि नारी की सुदृढ़ एवं सम्मानजनक स्थिति एक उन्नत, समृद्ध और मजबूत समाज व

राष्ट्र का प्रतीक है। इसी को ध्यान में रखते हुए हमारी सरकार का एक वर्ष महिलाओं के सम्मान, सुरक्षा और कल्याण को समर्पित रहा है। उन्होंने कहा कि पिछले साल प्रदेश की जनता ने हमें सेवा का जो मौका दिया, उसमें माता-बहनों की महत्वपूर्ण भागीदारी रही। हमारे शास्त्रों में कहा भी गया है कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' यानी जहां नारियों की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। स्वामी विवेकानंद का भी कहना था कि महिलाओं की स्थिति में सुधार लाए बिना दुनिया का कल्याण संभव नहीं है। मुख्यमंत्री राज्य सरकार का एक वर्ष पूरा होने के उपलक्ष्य में 14 दिसंबर को उदयपुर में आयोजित राज्यस्तरीय महिला सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने अपने संकल्प पत्र में प्रदेश की माता-बहनों से वादा किया था कि हम नारियों के खिलाफ अपराधों के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही करेंगे। राज्य में सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं के साथ होने वाली छेड़छाड़ की घटनाओं की रोकथाम एवं बच्चियों व महिलाओं को भयमुक्त वातावरण प्रदान करने के लिए हमने राज्य में 500 कालिका पेट्रोलिंग यूनिट के गठन का निर्णय लिया है। प्रथम चरण में 250 कालिका पेट्रोलिंग यूनिट के संचालन के लिए स्वीकृति जारी कर एक हजार कांस्टेबल के पद स्वीकृत कर दिए हैं। महिलाओं को आपात स्थिति में 24 घंटे पुलिस सहायता प्रदान करने के लिए हमने एक ऐप तथा आरएसआरटीसी के सुरक्षा कमांड सेंटर व पैनिक बटन परियोजना का शुभारंभ किया है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि बालिकाओं को प्रारंभ से ही समुचित शिक्षा और संबल देना चाहिए जिससे वे उन्नति के पथ पर अग्रसर होकर समाज और देश की प्रगति में अपना योगदान दे सकें। इस दिशा में एक कदम बढ़ाते हुए हमने गरीब परिवारों की बालिकाओं के जन्म पर एक लाख रुपये का सेविंग बॉन्ड प्रदान करने के लिए लाडो प्रोत्साहन योजना प्रारंभ की है। इस योजना के एक लाख लाभार्थियों को प्रथम किश्त के रूप में 2 हजार 500 रुपये हस्तांतरित किए हैं। हमारी सरकार बनते ही 1 जनवरी, 2024 से पात्र परिवारों को 450 रुपये में रसोई गैस सिलेंडर उपलब्ध कराना शुरू कर दिया गया। आज एनएफएसए लाभार्थी परिवारों को सिलेंडर की सब्सिडी राशि डीबीटी के माध्यम से हस्तांतरित की गई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने आंगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का मासिक मानदेय 10 प्रतिशत

बढ़ाया है। साथ ही, प्रधानमंत्री मातृ वंदन योजना में राज्य की लगभग 4 लाख 50 हजार महिलाओं को लाभान्वित किया गया है। राज्य सरकार ने योजना के तहत दी जाने वाली 5 हजार रुपये की राशि को बढ़ाकर 6 हजार 500 रुपये कर दिया है। आज इसकी 1 हजार 500 रुपये की अतिरिक्त राशि को 70 हजार महिलाओं को हस्तांतरित किया गया है। मुख्यमंत्री ने कहा कि हमने आंगनबाड़ी केंद्रों में बच्चों को दूध वितरण के लिए मुख्यमंत्री अमृत आहार योजना शुरू की है। प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में 5-5 नए आंगनबाड़ी सहित कुल एक हजार नए आंगनबाड़ी केंद्रों को स्वीकृति प्रदान की है। प्रत्येक ब्लॉक में एक आदर्श आंगनबाड़ी बनाने की शुरुआत भी कर दी गई है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आज हमने 10 हजार इलेक्ट्रिक कुकिंग सिस्टम के वितरण की शुरुआत की है। साथ ही 1 लाख नई लखपति दीदियों एवं 216 नमो ड्रोन दीदियों का भी सम्मान किया है। आज ही 10 हजार स्वयं सहायता समूहों को प्रति समूह 15 हजार रुपये रिवोल्विंग फण्ड का हस्तांतरण किया गया है। इसके अतिरिक्त महिला निधि बैंक के माध्यम से स्वयं सहायता समूहों को 100 करोड़ रुपये के ऋण की स्वीकृति प्रदान की है एवं 45 लाख स्वयं सहायता समूहों के लिए राज सखी पोर्टल का शुभारंभ किया है।

उप मुख्यमंत्री तथा महिला एवं बाल विकास मंत्री दिया कुमारी ने कहा कि आधी आबादी देश की सौ फीसदी आबादी को प्रभावित करती है। इसी दिशा में केन्द्र व राज्य की डबल इंजन की सरकार द्वारा महिला वर्ग को केन्द्र बिन्दु मानते हुए जनकल्याणकारी योजनाएं संचालित की जा रही है। उन्होंने कहा कि लखपति दीदी, नमो ड्रोन दीदी के साथ ही राज्य सरकार की लाडो प्रोत्साहन योजना सहित अन्य योजनाओं के माध्यम से महिला सशक्तिकरण किया जा रहा है। राजस्व मंत्री हेमंत मीणा ने कहा कि विकसित राजस्थान में महिलाओं का योगदान महत्वपूर्ण है। प्रदेश के चहुंमुखी विकास के लिए पानी, ऊर्जा, बुनियादी ढांचे सहित सभी क्षेत्रों में लगातार कार्य किए जा रहे हैं। महिला एवं बाल विकास राज्यमंत्री डॉ. मंजू बाघमार ने कहा कि मुख्यमंत्री के कुशल नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा नारी शक्ति, सुरक्षा एवं सम्मान के लिए निरंतर अहम निर्णय लिए जा रहे हैं।

इससे पहले श्री शर्मा ने स्कूल शिक्षा विभाग की स्टॉल पर नि:शुल्क साइकिल वितरण योजना अन्तर्गत राजकीय विद्यालय में कक्षा 9 में अध्ययनरत बालिकाओं को साइकिल वितरण किया। दिव्यांग कल्याण से संबंधित सामाजिक न्याय अधिकारिता विभाग की सुखद दाम्पत्य जीवन योजना के अंतर्गत 5 लाख का चैक वितरण व विशेष योग्यजन को कृत्रिम अंग उपकरण सहायता योजना के अंतर्गत सुगम्य केन किट का वितरण किया। इसके अतिरिक्त कॉलेज शिक्षा विभाग की स्टॉल पर कालीबाई भील मेधावी छात्रा स्कूटी योजना एवं राजस्थान देवनारायण छात्रा स्कूटी एवं प्रोत्साहन राशि योजना तथा सामाजिक न्याय अधिकारिता विभाग की मुख्यमंत्री स्कूटी योजना अंतर्गत लाभार्थियों को स्कूटी वितरण किया।

इस अवसर पर जनजाति क्षेत्रीय विकास मंत्री बाबूलाल खराड़ी, उदयपुर शहर विधायक ताराचंद जैन, उदयपुर ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, वल्लभनगर विधायक उदयलाल डांगी, गोगुन्दा विधायक प्रतापलाल गमेती, सलूम्बर विधायक शांतादेवी, निम्बाहेड़ा विधायक श्रीचंद कृपलानी, अतिरिक्त मुख्य सचिव ग्रामीण विकास श्रीमती श्रेया गुहा, प्रमुख शासन सचिव खान एवं पेट्रोलियम तथा जिले के प्रभारी सचिव टी. रविकांत, शासन सचिव ग्रामीण विकास आशुतोष पेडणेकर, शासन सचिव महिला एवं बाल विकास महेन्द्र सोनी, संभागीय आयुक्त प्रज्ञा केवलरमानी, जिला कलक्टर अरविन्द पोसवाल, एसपी योगेश गोयल, युडीए आयुक्त राहुल जैन, नगर निगम आयुक्त रामप्रकाश, एडीएम प्रशासन दीपेंद्रसिंह, सीईओ जिला परिषद हेमेंद्र नागर, एडीएम सिटी वारसिंह सहित जनप्रतिनिधिगण, वरिष्ठ अधिकारीगण एवं बड़ी संख्या में महिलाएं उपस्थित रहीं।

पर्वतों की अनोखी कहानियां
पर्वतदिवस : श्रीकृष्ण की गिरिगाथा

-डॉ. श्रीकृष्ण 'जुगनू'-

नदियों की तरह पहाड़ों के अपने कथा प्रसंग हैं और अवतारों के साथ भी जुड़े हैं। प्रसिद्ध आबू या अर्बुद वह पर्वत है, जिसका जिक्र वेदों में आया है। सुश्रुत ने तो सर्वेक्षण ही दिया! यह वह पर्वत है जहां श्रीकृष्ण ने अपना मुकाम किया था। वासुदेव के जीवन में गोवर्धन गिरि को उन्होंने धारण किया था और आबू वह पर्वत है जिसने श्रीकृष्ण को धारण किया!

लगभग 5वीं सदी तक संपादित हुए हरिवंश, महाभारत का खिल कहा जाता है, परंपरा से यह सिद्ध करता है कि इस पर्वत पर श्रीकृष्ण का आगमन हुआ था। उन्होंने पुत्र प्रद्युम्न तथा भाई सात्यकि के साथ इस पर्वत पर रात्रि विश्राम किया था। उनके आगमन पर यह पर्वत विनम्र हो गया अर्थात् उसको समतल किया गया, आवास के योग्य बनाया गया। वह शाण जैसा हो गया, यह घटना जिस स्थल पर हुई, वह आज सारणेश्वर के नाम से ख्यात है -

यत स शाण प्रमाणोस्य भक्त्या समभवन्नृप।
वरं प्रदात् ततस्तस्य पर्वतस्य महाद्युति:।।
(विष्णुपर्व 74, 14)

इस अवसर पर श्रीकृष्ण ने उस पर्वत को यह वरदान दिया कि तुम शाणपाद के नाम से ख्यात होओगे। जैसे हिमालय पर्वत के ऊपर आधा भाग परम पवित्र होता है, उसी के समान तुम भी शुभ एवं पवित्र बने रहोगे। यहीं पर उन्होंने शिव का पारिजात के पुष्पों से पूजन किया और स्तुति की। वे शिव 'शारणेश्वर' कहे गए। यह वैष्णव लोक में शैव प्रभाव भी लगता है और बाद का प्रसंग भी संभव है। ऐसे प्रसंग हर वैष्णव पुराण में प्रक्षिप्त हुए हैं। श्रीकृष्ण ने यह भी वरदान दिया कि तुम्हारे पाषाण से ही विष्णुलोक के चाहने वाले लोग भगवान की प्रतिमा बनाकर उसकी सेवा करेंगे -

पाषाणै: प्रतिमां तात कारयित्वा च कौरव।
शुश्रूषन्ति कृतात्मानो विष्णुलोकोभिकांक्षिण:।।
(उपर्युक्त 74, 54)

जाहिर है कि विष्णु की प्रतिमा के निर्माण में इस पर्वत के पाषाण का बहुतायत से और बहुत प्राचीन काल से उपयोग होता आया है। चंद्रावती नगरी तो बड़ा प्रमाण है ही! इन्द्र के साथ उनका युद्ध पुष्कर में हुआ था और जनार्दन ने आबू से ही वहां के लिए प्रस्थान किया था। गिरिमह अर्थात् पहाड़ यज्ञ बहुत प्रचलन में रहा जिसको डूंगर भोज या मंगरे राब के रूप में मनाया जाता है। हरिवंश में श्रीकृष्ण स्वयं इसकी आज्ञा देते हैं।

उस काल में यहां बहुत से असुर जो खानों की खुदाई में लगे रहते थे, रहा करते थे। श्रीकृष्ण ने कहा कि मैं सदा ही तुम पर निवास करूंगा, उन भयानक असुरों का दमन करूंगा। इस प्रसंग में यह महत्वपूर्ण सत्य भी छिपा हुआ है कि तब यहां एक बस्ती के ध्वंसावशेष थे, जिसका नाम षटपुर था। लोग उसे लेकर कई प्रकार की बातें करते थे। भारतीय साहित्य में किसी जमींदोज नगर होने का यह पहला संदर्भ है।

कुछ और प्रसंग :

भारत में पहाड़ों के कुल पर्वत, कुलाकुल, कुलाचल पर्वत के परिचय पुराणों के भूगोल की विशेषता है तो पर्वतराज, टूंक, भूधर, शिखर, डूंगर, गिरि, तुंग, नग, अद्रि जैसे सौ से ज्यादा पर्याय की भी अपनी अपनी कहानियां हैं। इनसे आपके और हमारे तथा देशों के नाम हुए। हर पर्वत का अपना नाम है। पर्वत के नामों और उनकी बातों का संग्रह किया जाए तो एक बड़ा कोश तैयार हो सकता है। मैंने जयसमंद में गिरने वाले 99 नालों के नाम आसपास की पहाड़ियों के आधार पर ही चुने और निर्धारित किए।

(मेवाड़ का प्रारंभिक इतिहास)

- इंद्र के क्रोधी होने से पहले पर्वत उड़ते थे। इंद्र ने पहाड़ों के पंख काटे और समुद्र में गिरा दिया।

- पर्वतों से पृथ्वी आयुष्वान रहती है और धनदायक धरा बनी रहती हैं।

- पहाड़ों ने ही मेघों को जीता और निचोड़ कर नदियों और झरनों को जन्म दिया।

- विंध्याचल बढ़ने वाला और सूर्य की किरण का अवरोधक पर्वत है, अगस्त्य ने उसे कह दिया कि वह जब तक नहीं आए, रुके रहो।

- किष्किंधा तो रामायण का कांड हुआ। वानर वहां के राजा हुए इतने पराक्रमी कि रावण को कांख में दबा डाला।

- द्रोणगिरि की औषधियों का अध्ययन दुनिया भर में करवाया जाता था।

- महेंद्र पर्वत और परशुराम का प्रसंग राम कथा का अंश हुआ।

- पहाड़ सिद्धि जैसी साधना तांत्रिकों ने की और वह पाया कि वचन प्रमाण हो गया।

- गिरिकूप या डूंगर खाड धातु शोधक खदानों को कहा गया और उनके जल वाले रास्ते गिरिवाह कहे गए।

- पर्वतों से हमारे समुदाय हैं, तीर्थ हैं, वन हैं, वन्यजीव हैं, विहग हैं, वनौषधियां हैं। वन से वायु और वृष्टि है। (वृक्षायुर्वेद)

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 904, आर्ची आर्केड, राम-लक्ष्मण वाटिका के पास, न्यू भूपालपुरा उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत, उप संपादक : अर्थांक भानावत।
फोन : 0294-2429291, मोबाइल-9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।